हरिकृष्ण 'प्रेमी'

# रक्त-रेखा

ऐतिहासिक नाटक



**श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी'**

प्रकाशक :
कौशाम्बीप्रकाशन
दारागंज, इलाहाबाद-६



मूल्य :
तीनरुपये पचहत्तरपैसे ।

संस्करण
संवत् २०३६ वि०
सन् १९८२



मुद्रक
देववाणी मुद्रणालय
८२, नया बैरहना
इलाहाबाद

# भूमिका

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

प्रस्तुत नाटक भारत पर प्रथम इस्लामी आक्रमण, जो सिन्ध प्रदेश पर हुआ था के आधार पर लिखा गया है, किन्तु इस्लाम और हिन्दू धर्म के संघर्ष को निरूपित करना इसका उद्देश्य कदापि नहीं है। मुख्य उद्देश्य है उन परिस्थितियों और दुर्बलताओं को प्रकट करना जिनके कारण सिन्ध में हमारी पराजय हुई। हम अपनी भूलों से अवगत हों और उन्हें दोहराएँ नहीं। अब तो हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई आदि विविध धर्मों के अनुयायी भारत राष्ट्र के अंग बन गये हैं और अपने राष्ट्र की स्वाधीनता और उसके सम्मान, उत्कर्ष के लिए समान रूप से अपना दायित्व समझते हैं,—उसका पालन करते हैं, और जैसा कि हमने पिछले कुछ वर्षों में भारत—चीन और भारत—पाकिस्तान के संघर्षों में देखा है।

भारत को पिछली कई शताब्दियों से पराधीनता और असम्मानजनक स्थिति में रहना पड़ा है। उसकी सबसे अधिक बर्बादी अंग्रेजों के शासन-काल में हुई है क्योंकि वे केवल शासक ही नहीं व्यापारी भी थे। उन्होंने भारत के कला-कौशल और उद्योग-धन्धों को नष्ट कर दिया ताकि इंग्लैंड में बना माल यहाँ खपाया जाये। इस प्रकार प्रतिवर्ष भारत के अरबों रुपये इंग्लैंड के उद्योगपतियों और व्यापारियों की जेब में जाते रहे और हमारा देश दरिद्रता की चरम सीमा पर पहुँच गया, जो कभी सोने की

चिड़िया कहा जाता था, जहाँ दूध-दही की नदियाँ बहती थीं, जिसके वैभव और ऐश्वर्य से संसार ईर्ष्या करता था।

हम अब स्वाधीन हैं और अपने भाग्य का निर्माण करने के लिए स्वयं उत्तरदायी हैं, किन्तु अब भी संसार की कुछ स्वार्थी या साम्राज्यवादी शक्तियाँ ऐसी हैं जो हमें आत्मनिर्भर, स्वावलंबी और शक्तिशाली नहीं बनने देना चाहतीं इसलिए हमें बहुत सावधान होने की आवश्यकता है।

भारत एक विस्तृत देश है, जिसे महादेश भी कहा जा सकता है। प्रकृति हम पर उदार है। सब प्रकार की खनिज सम्पदाएँ हमें उपलब्ध हैं और बीच की पराधीनता-जनित कुछ अवधि को छोड़कर, जो अंग्रेजों के शासन काल की देन थी सदा ही हम कृषि-उपज में आत्मनिर्भर ही नहीं रहे अपितु अन्य देशों की भूख मिटाने में भी हम समर्थ रहे हैं। ज्ञान-विज्ञान में कला-कौशल में और उद्योग-धंधों में कभी हम संसार का नेतृत्व करते थे। अब यदि संपूर्ण राष्ट्र अर्थात् राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को समझे, स्वार्थ और संकीर्णताओं को छोड़े, आलस्य, निराशा और पराजित मनोवृत्ति से ऊपर उठकर नैतिकता का मूल्य समझे तो इसमें संदेह नहीं कि भारत अमेरिका और रूस की अपेक्षा भी अधिक समृद्धशाली और शक्तिसम्पन्न हो सकता है।

इस नाटक में भी यही बात कही गयी है कि हमें देश को खंड-खंड करनेवाली भावनाओं को निर्मूल करना आवश्यक है। भारत यदि कभी पराजित हुआ है तो उसकी जड़ में हमारी सामाजिक परम्पराएँ रहीं जिन्हें अज्ञानी लोग धर्म का अंग मान बैठे हैं। हमें इन सामाजिक विषमताओं का पोषण करनेवाले

कुसंस्कारों को समाप्त करना होगा। दूसरा दुर्भाग्य हमारा यह रहा कि हम में यह भावना प्रबल नहीं हो पायी कि संपूर्ण भारत एक है और इसकी एकता पर ही भारत की समृद्धि तथा स्वतन्त्रता निर्भर है। भारत के किसी भी कोने की भूमि पर विदेशियों का अतिक्रमण हो तो संपूर्ण भारत एक झंडे के नीचे शत्रु के दाँत खट्टे करने के लिए सर पर कफन बाँध कर सन्नद्ध हो जाये। मैंने इस नाटक में इस बात पर भी जोर दिया है।

नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी इस युग की समस्याओं का समाधान उपस्थित करता है। मैंने अपने प्रायः सभी नाटकों में वर्तमान के लिए प्रकाश देने का यत्न किया है। मेरे पाठकों ने उन्हें पसंद किया और उनका अभिनय भी किया है। मुझे विश्वास है कि यह नाटक भी मेरे पाठकों द्वारा आदर पायेगा।

हरिकृष्ण 'प्रेमी'

# पात्र-सूची

| | |
|---|---|
| दाहर | सिन्ध का राजा |
| जयसिंह | सिन्ध का युवराज |
| सूर्यदेवी | सिन्ध की बड़ी राजकुमारी |
| परमाल | सिन्ध की छोटी राजकुमारी |
| बलदेव | सिन्ध का गुप्तचर |
| श्रीवत्स | श्रीलंका का नागरिक |
| खलीफा | बगदाद का शासक |
| क्षपाकर | सिन्ध का मंत्री |

एक अरब बंदी

# पहला अंक

[ स्थान—सिन्ध की राजधानी आलोर में सिन्धनरेश दाहर के राजप्रासाद की राज-वाटिका। समय—संध्या के कुछ पूर्व। दाहर अपने प्रधान मंत्री क्षपाकर के साथ विचारविमर्श करता हुआ घूम रहा है। दाहर राजसी परिधान में है और उसके हाथ में तलवार है। उसकी आयु लगभग पचास वर्ष की है। शरीर सुपुष्ट और तेजस्वी है। क्षपाकर भी उसी आयु का है। ]

दाहर — क्षपाकर, उधर पश्चिम दिशा की ओर देखो आकाश में काली घटाएँ घिर रही हैं और क्षणों पश्चात् अस्ताचलगामी भास्कर की रश्मियों से रक्तवर्ण हो उठेंगी।

क्षपाकर — जान पड़ता है पराक्रमांक सिन्धाधिपति दाहर सहसा कवि की-सी कल्पना में रमने लगे। धरती के सुख-दुःख को भूलकर आकाश पर, आप की दृष्टि गड़ गयी। आपकी ऐसी भावुकता से आपका यह मंत्री क्षपाकर आशंकित हो उठा है।

दाहर — आशंकित अथवा आतंकित ?

क्षपाकर — आतंकित किसलिए ? जिसके मस्तक पर आपके समान यशस्वी पराक्रमी और उदार नरेश का वरद हस्त है, उसे कौन आतंकित कर सकता है ? महाराज मैं आतंकित नहीं आशंकित हो उठा हूँ।

दाहर — किन्तु आशंकित भी किसलिए ?

क्षपाकर इसलिए कि महाराज यदि कविता-कामिनी से प्रेम करने लगे तो प्रजा उपेक्षित और स्नेह-वंचित होकर व्यथित होगी। प्रजारंजन ही शासन का प्रथम कर्तव्य है।

( दाहर खिलखिलाकर हँस पड़ता है। )

दाहर दाहर अपने कर्तव्य से भलीभाँति परिचित है। मैं पूछता हूँ कि क्या कविता और कर्तव्य सर्प और नकुल की भाँति एक दूसरे से बैर रखते हैं ? क्या कविता मानव को कर्तव्यच्युत कर सकती है ? क्या वह अफीम का नशा है जो मानव-शरीर और मस्तिष्क को दुर्बल बना देती है।

क्षपाकर नहीं महाराज, मेरा आशय कुछ और है। संसार की प्रत्येक वस्तु अच्छी भी है और बुरी भी। यह जो आपके सबल हाथों में तीक्ष्ण असि है; यह अत्याचार करने का साधन भी बन सकती है और अत्याचार की शत्रु भी। कविता भी तलवार की भाँति है--इसका उपयोग विश्व-हित, मानवता के उत्थान, और देश के पराक्रम को जागृत करने के लिए किया जा सकता है और यह जन-मानस को विलासिता की ओर भी अग्रसर कर सकती है। कविता, केवल पाण्डित्य और कल्पनाशील प्रतिभा के प्रदर्शन का एक मात्र साधन नहीं है, न यथार्थ और वास्तविकताओं की उपेक्षा कर काल्पनिक जगत् में विचरण की प्रेरक शक्ति ही है उसका उद्देश्य केवल जन मनोरंजन भी नहीं है। कविता यथार्थ का दर्पण, जन-मानस को स्फूर्ति करने, राष्ट्र और मानवता को जीवित रखनेवाली संजीवनी बूटी-सी जन-जीवन को प्रेरणा देती है।

दाहर जान पड़ता है कि तुम रसिक कवियों से घृणा करते हो—किन्तु, मंत्री ! यह संसार एकरस नहीं बनाया जा सकता। जैसे प्रकृति में छः ऋतुएँ हैं उसी प्रकार मानव-जीवन की प्रकृति में नव-रस हैं। प्रकृति का ऋतु-चक्र जब अपनी स्वाभाविक गति छोड़ देता है तो सृष्टि में आतंक छा जाता है। मानव को एक-रस बनाना प्रकृति के चक्र में बाधा डालता है। अनेक वस्तुएँ देखने में बुरी लगती हैं किन्तु मानव उसको भी मंगलकारी बना लेता है। विष भी कभी जीवन प्रदान करता है और कभी मरण। विष को विष से समाप्त किया जाता है—किन्तु जाने दो इस विवाद को। तुम कदाचित् आशंकित हो उठे हो कि दाहर अब जीवन के संध्याकाल में उन्मादवश कवि होने लगा। क्षपाकर ! राजा होना मानव का सौभाग्य नहीं, दुर्भाग्य है। उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। (लंबी साँस लेकर) हाय, यदि दाहर के भाग्य में कवि बनने का सौभाग्य होता

क्षपाकर तो महाराज ! मुझे क्षमा करें, मुझे कहना पड़ता है कि आपके मस्तक पर यह राजमुकुट न होता। आपको अपने जैसे किसी नृपति की राजसभा में उसकी चाटुकारिता में छंद सुनने पड़ते।

दाहर क्यों ? कविता क्या केवल शासकों की चाटुकारी करने के लिए है ? कवि क्या जन-जीवन का साथी नहीं है ? वह जन-मानस की अनुभूतियाँ अंकित करे। देश के शौर्य और शक्ति को उत्साहित करने का कार्य करे ! राज-सभा से भले ही वह वंचित रहे, किन्तु जन-साधारण उसके चरण चूमेंगे और उसके चरणों में

श्रद्धा के फूल चढ़ायेंगे। राज-सभा का मोह कवि को होना ही क्यों चाहिए ?

क्षपाकर राज-सभा का मोह अर्थात् लक्ष्मी का मोह...

दाहर लक्ष्मी का मोह नशा है--पागलपन है- मूर्खता है।

क्षपाकर किन्तु, मैं महाराजके सम्मुख कुछ अप्रिय बात कहने की धृष्टता कर रहा हूँ। मैं पूछता हूँ कि लक्ष्मी का मोह अर्थात् विभव की कामना पागलपन है तो आपके पिताश्री श्रीमान् चच ने सिन्ध का राजमुकुट अपने मस्तक पर क्यों धारण कर लिया ? वह तो साहसीराय के एक मात्र मंत्री थे। वह मंत्री-पद से ही संतुष्ट क्यों नहीं रहे ?

(दाहर अपने मस्तक से राजमुकुट उतारता है।)

दाहर पिताश्री के मन की बात मैं नहीं जानता, क्षपाकर ! मैं केवल यह कह सकता हूँ कि उनके पुत्र दाहर को राजमुकुट धारण करने का लेशमात्र भी मोह नहीं है। मैं यह राजमुकुट अपने मंत्री के मस्तक पर रखने को प्रस्तुत हूँ। (दाहर क्षपाकर के मस्तक पर राजमुकुट रखने के लिए बढ़ता है किन्तु क्षपाकर उसका हाथ थाम लेता है।)

क्षपाकर नहीं महाराज ! यह राजमुकुट आपके ही मस्तक पर शोभा देता है। यह काँटों का ताज है, जिसमें अपने व्यक्तित्व को जन-हित में विलीन कर देने की अपार शक्ति हो वही राजमुकुट अपने मस्तक पर धारण कर सकता है।

दाहर तो क्या तुम समझते हो कि तुम में जन-हित की आकांक्षा, बलिदान और जन-सेवा करने की भावना का अभाव है ?

क्षपाकर  मैं आपके समान महान् कहाँ हूँ ? कहाँ सूर्य और कहाँ दीपक ?

( क्षपाकर दाहर के मस्तक पर फिर से राजमुकुट रख देता है। )

दाहर  तुम बलिदान का बकरा नहीं बनना चाहते। ( हँसता है। ) जिसे बलिदान का बकरा बनना हो वह अपने मस्तक पर राजमुकुट धारण करे। अभी तुमने कहा कि पिताश्री ने लक्ष्मी के मोह में राजमुकुट धारण किया था। मस्तक पर राजमुकुट धारण करना यदि वरदान है तो तुम क्यों नहीं इसे स्वीकार करते ? तभी तो समझ पाओगे कि पिताश्री ने क्यों राजमुकुट अपने मस्तक पर रखा। पिताश्री ने विभव और प्रभुता की लालसा के वशीभूत, अपने मस्तक पर राजमुकुट नहीं धारण किया था। सिन्ध के शासन को अपने हाथों में लेना तूफान में नाव खेना है, प्रज्ज्वलित ज्वालामुखी में प्रवेश करना है। आए दिन अरब-आक्रमण से सिन्ध पीड़ित था। साहसीराय के पिता के काल में सिन्ध के मकरान प्रदेश पर अरबों का अधिकार हो गया था। साहसीराय ने भी उसे मुक्त करने के प्रयास में प्राण गँवाए। उस स्थिति में पिताश्री क्या करते ? सिंहासन का साहसीराय के वंश में कोई अधिकारी नहीं था। तब क्या संपूर्ण सिन्ध अरबों को दिया जाता ? ऐसा न कर पिताश्री ने अरबों से संघर्ष करने का कठिन कर्तव्य अपने ऊपर लेकर कौन-सा पाप किया ?

क्षपाकर  पाप नहीं, यह तो पुण्य का--बड़े साहस का कार्य था।

दाहर  अपना कर्तव्य निभाते हुए, विदेशियों की प्रचंड बाढ़

को रोकने के प्रयास में ही उन्होंने अपने प्राणों की बलि दी और उनका पुत्र यह अकिंचन दाहर भी उनके अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने के लिए ही साँस ले रहा है। उसकी प्रत्येक साँस एक संकल्प से अनुप्रेरित है।

क्षपाकर मैं यह जानता हूँ, महाराज! किन्तु मुझे कहना पड़ेगा कि आप असंभव को संभव करना चाहते हैं।

दाहर आप हैं मंत्री, आप काम लेते हैं मस्तिष्क से लेकिन मैं--राजा--मेरे प्राणों में मेरे राज्य की संपूर्ण प्रजा की भावनाएँ निवास करती हैं--मैं भावनाओं से व्याकुल हो जानेवाला हृदय का दास हूँ– विजय-पराजय और हानि-लाभ की गणना मैं नहीं कर सकता–करना नहीं चाहता। देश का गौरव ही मेरा गौरव है। मैं उसी के लिए जी रहा हूँ और उसी के लिए मरूँगा।

क्षपाकर किन्तु अरबों की प्रचंड आँधी के आगे रोम-साम्राज्य जैसी सत्ताएँ पत्ते की तरह उड़ गई, उनसे हम कब तक लोहा ले सकेंगे ?

दाहर खेद होता है मुझे आपके मुँह से इस प्रकार के निराशा-पूर्ण शब्द सुनकर। अरबों की शक्ति ने अभी-अभी जन्म लिया है– आज भले ही संसार उससे भयभीत हो किन्तु भारत नहीं होगा। विश्व-विजयी सिकन्दर के सम्मुख भारत ने मस्तक नहीं झुकाया- ये अरब किस खेत की मूली है। भारत इनको एक फूँक में उड़ा दे सकता है।

क्षपाकर भारत उड़ा सकता है किन्तु सिन्ध नहीं।

दाहर ( लम्बी साँस लेकर ) यही तो भारत का दुर्भाग्य है। मेरे पाँव में काँटा चुभता है तो मेरा मस्तिष्क अनुभव करता है, मुँह से आह निकलती है और हाथ काँटे को

निकाल फेंकने को बढ़ता है। शरीर का प्रत्येक अंग संवेदना और सहानुभूति के धागों से बँधा हुआ है। वे सब मिलकर एक हैं—और अलग-अलग भी एक दूसरे के सहयोगी हैं किन्तु सिन्ध पर विदेशी आक्रमण होता है तो शेष भारत चैन की वंशी बजाता है। विदेशी आक्रमणकारी के पीछे उसके संपूर्ण साम्राज्य की शक्ति होती है और बेचारा सिन्ध —छोटा-सा प्रदेश, भारत के प्रवेशद्वार का प्रहरी, प्रचंड आक्रांता से एकाकी लोहा लेता है।

क्षपाकर यदि भारत एक होकर खड़ा हो जाए......

दाहर तो सेल्यूकस की भाँति सभी विदेशी हम चंद्रगुप्तों के चरण चूमेंगे। और तब किसी का साहस भारत की तरफ लालचभरी निगाहों से देखने का नहीं होगा। अरबों ने सिन्ध राज्य के एक भाग मकरान पर अभी तक अधिकार कर रखा है; इस कारण दाहर को रात में नींद नहीं आती, लेकिन भारत के अन्य राजाओं के महलों में नर्तकियाँ नाचती हैं—मदिरा के दौर चलते हैं। वे भोले हैं। वे अपने ही भविष्य से अनभिज्ञ हैं। वे नहीं सोचते कि आक्रमणकारी की अकांक्षा बंधन और सीमाएँ नहीं जानती।

क्षपाकर किन्तु मैं तो कहूँगा कि हमारा सिन्ध भी कहाँ अपने कर्तव्य को पूरी तरह समझ पाता है? राजा सोचता है—प्रजा कहाँ सोचती है? सिन्ध का शासक ब्राह्मण है—यह यहाँ के बौद्धों को फूटी आँखों नहीं सुहाता। वे विदेशियों की विजय-कामना करते हैं।

दाहर यह बुद्धिहीनता की पराकाष्ठा है। मानो ये विदेशी सिन्ध पर विजय प्राप्त कर यहाँ का राज्य इनको सौंप

कर चले जायेंगे। ये जायेंगे नहीं--बौद्धों को भी उसी आँच में जलना पड़ेगा जिसमें आज ब्राह्मण जल रहे हैं- एक दिन उसी में संपूर्ण प्रजा भी जल जायेगी।

क्षपाकर किन्तु देशद्रोहियों को समझाए कौन? वे स्वार्थ से अंधे हो रहे हैं। वे पराधीनता के अभिशाप की यातना और यन्त्रणा की कल्पना भी नहीं कर पाते। देशद्रोह तो सब से बड़ा पाप है।

दाहर समय ही उन्हें बुद्धि देगा। इतिहास इसका साक्षी है। पुरु जैसे वीर नृपति और कठ, शिव, अग्रश्रेणी और मालव जैसे साहसी गणराज्यों ने जब यूनानियों के भाले अपने वक्ष पर झेले तभी चाणक्य और चंद्रगुप्तों ने जन्म लिया। दाहर भी इन्हीं के पद-चिह्नों पर चल रहा है। दाहर भी आम्भी बनकर सुख की नींद सो सकता है--विलास के प्याले पी सकता है, किन्तु तब दाहर का नाम इतिहास में काले अक्षरों से लिखा जायेगा। सब उसके नाम पर थूकेंगे। समझे क्षपाकर! दाहर ने अपने मस्तक पर राजमुकुट धारण कर जीवन-व्यापी संघर्ष को आमंत्रित किया है। मेरी एक-एक साँस मेरे देश के लिए है।

क्षपाकर तभी तो प्रजा का एक बडा वर्ग श्रद्धापूर्वक आपके आगे मस्तक झुकाता है--बल्कि आपके आदेश पर मस्तक कटाने को तत्पर है। किन्तु यथार्थ से, वास्तविकता से हमें आँखें नहीं मूँदनी चाहिए। परिस्थितियाँ हमारे प्रतिकूल हैं। वीरता में अप्रतिम होते हुए भी हम अरबों से संघर्ष और संग्राम कर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

दाहर हम विजय प्राप्त करेंगे ही, यह मानकर तो मैं नहीं चलता। फल की इच्छा किये बिना कर्म करना-कर्तव्य

करते रहना मानव का धर्म है--भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से यही कहा था--मैं तुम्हारी भाँति निराशावादी नहीं हूँ। भले ही दाहर समाप्त हो जाए--कुछ काल के लिए सिन्ध विदेशियों के हाथ में चला जाए किन्तु मुझे आशा है कि हमारे संघर्ष से भारत के सुप्त यौवन की निद्रा भंग होगी। एक नया भारत जन्म लेगा और सिन्ध को अपना अंग समझकर इसकी पराजय को अपनी पराजय मानेगा--और तब जो विदेशी शक्ति आज पर्वत-सी जान पड़ती है, रुई का ढेर जान पड़ेगी। भारत के पुरुषार्थ की फूँक से वह उड़ती फिरेगी। जो देश अपनी स्वतन्त्रता की रक्षाहित प्राण न्योछावर करने को प्रस्तुत नहीं वह कभी स्वाधीन नहीं रह सकता, उसके भाग्य में दासता ही लिखी है।

(दाहर की दो पुत्रियाँ सूर्यदेवी और परमाल पुरुष वेश में शस्त्रों से सज्जित प्रवेश करती हैं। सूर्यदेवी की आयु लगभग बीस वर्ष है और परमाल की लगभग अठारह वर्ष। दोनों के नख-शिख तेजस्वी और दोनों अत्यन्त सुन्दर हैं।)

दाहर — सूर्यदेवी और परमाल, तुम दोनों इस समय इस वेश में कहाँ जा रही हो ?

सूर्यदेवी — पिताजी, इस समय हम जा नहीं रहीं, आ रही हैं।

दाहर — हाँ, हाँ, आ रही हो महल में से ही न ?

परमाल — नहीं, नहीं, पिताजी ! हम देवल से आ रही हैं।

दाहर — मैंने कितनी बार कहा कि तुम हमारी अनुमति के बिना कहीं न जाया करो।

क्षपाकर — आप यह न भूलें कि आप राजकुमारियाँ हैं और आपका इस प्रकार बिना अपनी रक्षा की व्यवस्था किए एकाकी

भ्रमण करना विपत्ति को आमंत्रण देना है। आप यह न भूलें कि हमारा देश इस संकटपूर्ण स्थिति में है। राजवंश पर तो शत्रु की विशेष नजर है।

सूर्यदेवी — है तो रहे। आप याद रखिए कि जब तक हमारे हाथ में तलवार है तब तक किसका साहस हो सकता है जो हमारी तरफ आँख भी उठाकर देखे। हम विपत्तियों से नहीं डरतीं। हम विपत्तियों को आमंत्रित करती हैं।

परमाल — महलों के एकरस जीवन से हमारा मन ऊब जाता है इसलिए कभी-कभी हम आखेट के लिए निकल पड़ती हैं। हम आखेट के लिए ही देवल गई थीं।

सूर्यदेवी — किन्तु इस बार बहुत भयंकर जंतुओं का शिकार हमारी तलवारों ने किया।

दाहर — क्या सिंह का?

परमाल — सिंह का शिकार करते-करते तो अब हमारा मन ऊब गया है, पिताजी!

सूर्यदेवी — हाँ, पिताजी! हमारी तलवारें दीर्घकाल से नर-रक्त की प्यासी थीं। नर जो मानव के शरीर में दानव हैं। ऐसे दानव बहुत हैं संसार में। अब अनायास ही हमारी तलवारों को अपनी प्यास बुझाने का अवसर प्राप्त हो गया।

क्षपाकर — शिव-शिव! ब्राह्मण-कन्याएँ नर-रक्त की प्यासी? आप कह क्या रही हैं, राजकुमारी! आप जन्म से ब्राह्मण और नारी हैं। नारी का कार्य रक्त बहाना नहीं है, सृष्टि का विनाश करना नहीं है, निर्माण ही उसका कर्तव्य है, कर्तव्य ही नहीं स्वभाव है।

दाहर — यह न भूलिए, मंत्रीजी! कि जब पुरुष कायर हो जाते हैं तब नारी को प्रलयंकारी काली का रूप धारण करना

पड़ता है जिसका खप्पर रक्त का प्यासा रहता है, जो गले में मुंडों की माला पहनती है और जो रणभूमि में राक्षसों का नाश करती है। संसार के मंगल की कामना से ही काली दुष्टों का संहार करती है मैंनेअपी पुत्रियों को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा--शक्ति के इन तीन रूपों में पोषित किया है।

सूर्यदेवी और मंत्रीजी, आज हमारे देश के पुरुष कायरों की भाँति अपने घरों में छिपे बैठे हैं जबकि रणभूमि उन्हें पुकार रही है। पुरुषों की अकर्मण्यता ने ही हमें पुरुष-वेश धारण कर उसके कार्य करने के लिए प्रेरित किया है।

दाहर ऐसा कहकर, बेटी, तुम हमारा भी अपमान कर रही हो।

सूर्यदेवी प्रश्न एक व्यक्ति का नहीं है--चाहे वह राजा हो, चाहे प्रजा। प्रश्न है सर्वसाधारण का। हमारे सागरीय तटों पर आए दिन कितने वीभत्स कांड हो जाते हैं-विदेशी लुटेरे आकर हमारे देश की नारियों को पकड़ ले जाते हैं, उन्हें विदेशों में बेचने के लिए। एक सीता का हरण लंका के सर्वनाश का कारण बना था किन्तु आज सैकड़ों सीताओं का अपहरण हो रहा है और देश के राम सो रहे हैं, उनका रक्त पानी हो चुका है। धिक्कार है, हमारे देश के पुरुषों को।

क्षपाकर राजकुमारी आज बहुत उत्तेजित हो उठी हैं। बात क्या हुई है, स्पष्ट कहिए।

परमाल सुनते हैं कि शासन के सहस्रों आँखें होती हैं उसकी दृष्टि से अगोचर कुछ नहीं। किन्तु पिताजी! मुझे क्षमा कीजिए, मुझे कहना पड़ता है कि हमारा शासन अंधा है। उसे ज्ञात ही नहीं हो पाता कि कब विदेशी जलयान हमारे सागरीय तटों पर आते हैं और लूट-पाट

कर तथा नारियों का अपहरण कर चले जाते हैं। इनका दुस्साहस दुर्दमनीय होता जा रहा है। इनकी धृष्टता बढ़ती जा रही है, क्योंकि हम अकर्मण्य हैं। हमने साहस और आत्मविश्वास खो दिया है।

दाहर कदाचित् तुम्हारा ऐसे ही लुटेरों से पाला पड़ गया क्या ?

सूर्यदेवी हाँ, पिताजी, हम अश्वों पर सवार हो आखेट करती हुई अलोर जा पहुँचीं। वहाँ समुद्र-तट पर हमने कुछ नारियों का चीत्कार सुना तो हम उधर बढ़ीं। हमने देखा कि कुछ विदेशी चार भारतीय नारियों को पकड़े लिए जा रहे हैं—वे बेचारी चीत्कार कर रही हैं, किन्तु उनका चीत्कार अरण्यरोदन सिद्ध हो रहा है। ऐसा नहीं कि तट के निकट कोई होगा ही नहीं, किन्तु प्राणों का मोह प्रबल हो गया है लोगों में। सब अपने घोसलों में भयभीत पक्षियों से छिप गए थे। दूर-दूर तक मानव नाम का कोई जन्तु सिवा उन विदेशी नर-राक्षसों के वहाँ दिखाई नहीं दे रहा था।

क्षपाकर तब ?

परमाल तब क्या ? हमने अपने घोड़े उधर ही बढ़ा दिये और इसके पहले कि वे नर-राक्षस सम्हलें हमने उनके मस्तक भुट्टों की तरह काटने शुरू कर दिए। वे कुल दस व्यक्ति थे। चार को हमने मौत के घाट उतार दिया, एक को हम बन्दी बना लाये। शेष भाग खड़े हुए।

क्षपाकर तुम दो और वे दस। धन्य है तुम्हारा साहस।

सूर्यदेवी दस क्या वे सहस्र भी होते तब भी हम आगा-पीजा सोचे बिना यहीं करतीं। मृत्यु तो कभी-न-कभी आयेगी ही, अतः मृत्यु से भयभीत होना कायरता ही नहीं

मूर्खता भी है। जीवन का मोह ही मानव को कायर बनाता है। हम मरने से नहीं डरतीं। मृत्यु तो हमारे लिए माँ की गोद में सो जाने के समान है।

परमाल उन विदेशियों के पलायन कर जाने पर हमने उन नारियों से कहा तुम्हारी भाँति हम भी नारी हैं, यद्यपि वस्त्र पुरुष जैसे धारण कर रखे हैं। तुम भी हमारे समान बन सकती हो। वस्त्र चाहे पुरुषों के न पहनों लेकिन उनके समान निर्भय और शक्ति-सम्पन्न तुम्हें बनना होगा। शस्त्र चलाना तुम्हें सीखना होगा। अपना अपमान करने का यत्न करनेवाले का मस्तक तुम्हें काटना पड़ेगा। तभी तुम अपनी और भारत की लाज रख सकोगी।

क्षपाकर जान पड़ता है कि आप नारि-सेना तैयार करना चाहती हैं।

सूर्यदेवी अवश्य ही, मंत्रीजी! पिताजी ने हमें शस्त्र-संचालन को शिक्षा क्या इसलिए दी है कि हम घर में बैठकर चर्खा कातती रहें।

क्षपाकर ( मुस्कुराते हुए ) चर्खा तो बेचारी निर्धन स्त्रियाँ कातती हैं।

सूर्यदेवी आप बात को हँसी में उड़ा देना चाहते हैं। चर्खा कातना भी हमारे भाग्य में नहीं है। बड़प्पन भी हमारे जीवन के लिए अभिशाप बन रहा है। तब हमारा उपयोग क्या है? हमारा हृदय व्याकुल है कुछ करने और कुछ करते हुए जीवन समर्पित कर देने के लिए। हम संसार में आयीं हैं क्या केवल किसी राजकुमार का मनोरंजन करने के लिए ?

परमाल किन्तु इस युग में मनोरंजन के लिए अवकाश ही नहीं

है। देश में चतुर्दिक आग लगी हुई है और हम आनन्द मनाएँ--क्या यही हमारी मानवता है ? यह तो समय है सिर पर कफन बाँध कर निकल पड़ने का।

क्षपाकर हम निकल पड़ें और हवा में तलवारें घुमाएँ ?

सूर्यदेवी आश्चर्य है, आप मंत्री का कार्य कैसे करते हैं ? हवा में तलवारें नहीं घुमानी होंगीं--हमें चट्टानों से टक्करें लेनी होंगी, समझे। देश का स्वाभिमान हमें पुकार रहा है।

दाहर तुम ठीक कहती हो, बेटी ! हमें चट्टानों के वक्ष विदीर्ण करने होंगे। आज दिशाएँ क्षुब्ध हो उठी हैं। हमारे देश में भयानक भूकम्प आनेवाला है, जो बहुत कुछ उलट-पुलट कर देगा। मुझे अपने पाँवों के नीचे की धरती डोलती जान पड़ती है। पुराना मिटेगा, नवीन की सृष्टि होगी। इस नवीन की सृष्टि के लिए हमें मिट जाना होगा, स्वयं को खपा देना होगा।

सूर्यदेवी हाँ, कदाचित् हमें मिटना ही है, किन्तु मिटना भी गौरवपूर्ण होना चाहिए हम अपने प्राणों की बलि दें किन्तु ये बलिदान भविष्य के भव्य प्रसाद की नींव के पत्थर बनें।

क्षपाकर निश्चय ही, राजकुमारी! आपका कथन सही है। अभी तक मैं दुविधा में था। सोचता था की सिन्ध पर जो विध्वंस का अंधड़ आनेवाला है उसे किसी प्रकार रोका जाय और कदाचित् सिन्ध की सुरक्षा, शांति, समृद्धि और स्वाधीनता के शत्रुओं से समझौता कर उसे रोक भी लिया जा सकता है विदेशियों के आगे मस्तक झुका कर, किंतु यह तो कायरता की चरम सीमा होगी। कई शताब्दियों के बाद विदेशियों ने आक्रांता के रूप

में भारत की भूमि पर पाँव बढ़ाने का दुस्साहस किया है। इसका उपचार तो करना ही होगा, करना भी चाहिए।



परमाल अब आए मंत्रीजी राह पर।

दाहर बेटी, वे विदेशी भाग कर किधर गए ?

सूर्यदेवी उनका पोत समुद्र तट पर था। उसी पर वे चले गए।

दाहर मंत्रीजी हमें यह पोत रोक कर उसपर आरूढ़ सभी व्यक्तियों को बंदी बनाना होगा।

क्षपाकर पोत है किस देश का पहले इसका··

दाहर ( उत्तेजित होकर ) किसी देश का हो, हमें अपने देश के स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपराधियों को दंड देना ही होगा। संसार को जानना चाहिए कि भारत एक गौरवशाली और स्वाभिमानी महान् देश है। कोई भी व्यक्ति इसकी सीमा में घुस कर मनमानी नहीं कर सकता। कोई भी व्यक्ति भारत के नारियों का अपमान नहीं कर पायेगा। भारत जितना शांत-प्रिय है उतना ही स्वाभिमान को चुनौती देने वाले के लिए भयंकर भी।

क्षपाकर आपका कथन ठीक है महाराज, किन्तु मुझे फिर कहना पड़ता है कि आप भारत की बात करते हैं किन्तु शेष भारत

दाहर क्या बात करते हो, मंत्रीजी ? भारत क्या है ? मैं भारत हूँ, तुम भारत हो, मेरी ये बेटियाँ भारत हैं, वे नारियाँ भारत हैं जिनका विदेशियों ने अपमान किया है। एक भारतीय भी यदि देश के स्वाभिमान के लिए लोहा ले रहा है तो समझो भारत लोहा ले रहा है। मेरे बन्धु। बलिदान व्यर्थ नहीं जाता–मेरा शेष

भारत भी अपने कर्तव्य को समझेगा । दीपक से दीपक जलता है । अमावस की काल-रात्रि में सिन्ध को एकाकी दीपक की भाँति जलने दो । हमें बिना किसी की प्रतीक्षा किए विदेशियों की चुनौती का उत्तर देना होगा । तुरन्त उस पोत को रोका जाय-उस पर जितने भी व्यक्ति हैं उन्हें बन्दी बना लो और पोत पर जो सम्पत्ति है उसे राजकोष में जमा कर दिया जाय । जाइए--मेरी आज्ञा का पालन कीजिए ।

क्षपाकर महाराज की आज्ञा का पालन होगा । किन्तु मेरा निवेदन है कि पहले हमें उस व्यक्ति से जिसे राजकुमारियों ने बन्दी बनाया है बात करनी चाहिए । दंड देने के पहले अपराधी की बात सुनना विधि-विधान के अनुसार अनिवार्य है ।

परमाल छिः मंत्रीजी, बर्बर हिंसक नर-राक्षस के साथ विधि-विधान की बात करना पागलपन है । असल बात यह है कि आप डरते हैं कि इस विदेशी पोत पर अधिकार करने और उस पर जो लोग हैं उन्हें बन्दी बना कर हम युद्ध को आमंत्रित करेंगे ?

सूर्यदेवी क्या युद्ध के भय से हम और अन्याय अत्याचार सहते रहें । नहीं, यह नहीं होना चाहिए । इन विदेशियों से भयभीत होने की हमें आवश्यकता भी क्या है ? इसके पहले भी कितनी बार इन बर्बरों की सेना ने सिन्ध पर आक्रमण किया है किन्तु मकरान के आगे क्या कभी उनकी सेना बढ़ सकी है ? बार-बार हमारी सेना ने विदेशी सेना के दाँत खट्टे किए हैं ।

क्षपाकर मुझे सिन्ध की सेना के पराक्रम पर पूर्ण विश्वास है, राजकुमारी, किन्तु भारत की कुछ गौरवमयी परम्पराएँ

हैं भारत स्वतन्त्र रहना चाहता है और अन्य देशों को भी स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते देखना चाहता है वह धर्म-दीप लेकर भले ही विदेशों में गया किन्तु किसी पर शासन करने और वहाँ की प्रजा को लूटने के लिए आक्रमणकारी बन कर नहीं पहुँचा। उसने कभी अपनी ओर किसी से संग्राम नहीं छेड़ा किन्तु यदि किसी ने उसे युद्ध—भूमि में ललकारा है तो उसने ईंट का उत्तर पत्थर से दिया है।

दाहर किन्तु, क्षपाकर, हम कोई नया युद्ध तो नहीं छेड़ रहे हैं। हम तो पहले से ही इन विदेशियों के साथ युद्ध की स्थिति में हैं। हमारे राज्य का एक भाग, चाहे वह कितना ही छोटा हो, इनके अवैध अधिकार में है। उसे प्राप्त करने के लिए हमें इनसे युद्ध तो करना ही है। वर्तमान अपमानजनक स्थिति से संपूर्ण सिन्ध व्यथित है। देश की तरुणाई की भुजाएँ फड़क रही हैं शत्रुओं से दो हाथ करने के लिए। राजकुमारियों ने जो कुछ कहा वह एक प्रकार से देश की तरुणाई की भावनाओं की ही प्रतिध्वनि है। हमें तरुणाई के मार्ग के रोड़े नहीं बनना चाहिए। नहीं तो यह तरुणाई हमारे ही विरुद्ध विद्रोह करेगी।

क्षपाकर महाराज ! मैं तो आपका अनुशासन-बद्ध सेवक हूँ। आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है किन्तु मेरा सौभग्य है कि आपने सदा मुझे केवल सेवक नहीं मित्र भी समझा है इसलिए कभी-कभी आपकी सम्मति के विरुद्ध भी मैं बेसुरा राग अलापने लगता हूँ। शासन का उत्तरदायित्व गंभीर है, अतः कोई निश्चय, क्रोध में या भावुकता में आकर नहीं करना चाहिए। युद्ध

बच्चों का खेल नहीं और वह महाराज के व्यक्तिगत जीवन से ही संबंधित नहीं है। युद्ध की आँच में प्रजा को भी जलना पड़ता है। मैं राजकुमारियों से भी स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि क्षपाकर कायर नहीं है। विवेक से काम लेना कायरता नहीं है। मैं नहीं चाहता कि कोई भारत के न्याय पर अंगुली उठाने का अवसर पाए। आप अपराधी को अपनी बात कहने का अवसर तो प्रदान कीजिए।

दाहर ठीक है, परमाल तुम वन्दी को उपस्थित करो।

परमाल जो आज्ञा, पिताजी।

( परमाल प्रस्थान करती है )

सूर्यदेवी यह न्याय का पाखंड मेरी समझ में नहीं आता। वह विदेशी हैं, हमारी सीमा में उसने अनधिकार प्रवेश किया है और हमने अपनी आँखों से उसे भारतीय नारियों का अपमान करते देखा है। अब हमें उससे पूछताछ करने की क्या आवश्यकता है? मैं तो कहती हूँ, महाराज, हमें आज्ञा दें तो हम उस पोत पर जितने व्यक्ति हैं उन्हें तुरंत मौत के घाट उतार दें।

क्षपाकर किन्तु, राजकुमारी! हम यह कैसे मान लें कि उस पोत पर जितने भी व्यक्ति हैं वे सारे ही अपराधी हैं। राजा के हाथ में दंड देने की क्षमता इसीलिए प्रदान की गई कि वह वास्तविक अपराधियों को दंड दे किन्तु उसे यह भी देखना आवश्यक है कि उसके हाथ से किसी निरपराध व्यक्ति को दंड का भागी भी न बनना पड़े।

सूर्यदेवी किन्तु क्या ये विदेशी कभी इस प्रकार के विवेक से काम लेते हैं? आप तो इनके अनेक आक्रमण देख चुके हैं।

जैसे के साथ तैसा बनना होगा। भारत की नम्रता शालीनता और दया का शत्रु अनुचित लाभ उठाते हैं। भारत को हृदयहीनों के साथ हृदयहीन ही बनना पड़ेगा।

क्षपाकर कठोरता के साथ भारत कठोर होना जानता है। मैं इनसे युद्ध-भूमि में लोहा ले चुका हूँ मेरी तलवार ने अनेक शत्रुओं का रक्त पिया है। मैं अहिंसावादी जैन धर्म का अनुयायी हूँ फिर मुझे रक्त की होली खेलने में संकोच नहीं हुआ।

सूर्यदेवी आपकी तलवार ने युद्ध-भूमि में लड़नेवाले शस्त्र-सज्जित योद्धाओं का ही रक्त पिया है किन्तु ये बर्बर आक्रमणकारी जब आक्रमण करते हैं तब हमारे नगर और ग्रामों में आग लगाते हैं, आबाल-वृद्ध को या तो दास बनाने के लिए पकड़ ले जाते हैं या मौत के घाट उतार देते हैं—दूध पीते बच्चों पर भी दया नहीं करते नारियों की इज्जत लूटते हैं। मानवता तो कदाचित् इनके शब्दकोष में है ही नहीं। भारत ने तो कभी किसी देश पर आक्रमण किया नहीं, किन्तु इस उदारता और सरलता से मिला क्या भारत को ? विदेशी आक्रमण करते रहे। सदा हमारी धरती पर युद्धकी ज्वाला जलती रही। हमारे नगर-गाँव भस्म हुए—सम्पत्ति लुटी, जन-हानि हुई और इन विदेशियों का क्या गया ? हार गए तो अपने घर लौट गए। मैं कहती हूँ कि भारत को रक्षात्मक युद्ध करना छोड़ देना चाहिए। जो हमारा शत्रु है उसे हम साँस लेने का भी अवसर क्यों दें ? उनके घर में घुस कर ही हम उनका नाश करें। हम आक्रमणकारियों को अपने देश की सीमा से खदेड़

कर ही संतोष क्यों कर लें ? हमें उनकी सत्ता को समाप्त ही क्यों नहीं कर देना चाहिए ?

( परमाल बन्दी अरब को लेकर आती है। बन्दी की आयु-लगभग तीस-पैंतीस वर्ष की है। देखने में वह सैनिक ही जान पड़ता है। )

दाहर बन्दी के बंधन खोल दो।

( परमाल बन्दी के बंधन खोल देती है। )

सूर्यदेवी ( बन्दी से ) नराधम ! सिन्धनरेश के चरणों में प्रणाम कर।

बन्दी इस्लाम का माननेवाला खुदा और खलीफा के सिवा किसी के आगे मस्तक नहीं झुकाता।

दाहर तुम्हारे जैसे नीच लोग ही संसार में इस्लाम को बदनाम करते हैं। संसार का कोई धर्म नहीं कहता कि पुरुष स्त्रियों की इज्जत लूटता फिरे। मुझे विश्वास है कि तुम्हारे खलीफा भी यह नहीं चाहते। तुमने बिना अनुमति हमारे देश की सीमा में आकर राजनीतिक अपराध तो किया ही, हमारे देश की भद्र महिलाओं पर अत्याचार करने का प्रयास कर मानवता के प्रति भी भयंकर और अक्षम्य अपराध किया है।

बन्दी मैंने या मेरे साथियों ने कोई अपराध नहीं किया।

क्षपाकर कोई अपराध नहीं किया तो राजकुमारियाँ तुमको बिना किसी कारण बाँध लायी हैं ?

बन्दी आपकी और उनकी दृष्टि में हम लोगों ने अपराध किया है किन्तु इस्लाम की दृष्टि में नहीं।

दाहर मैं कहता हूँ, दुष्ट मनुष्य, तू इस्लाम को बदनाम न कर। दुराचार को कोई भी धर्म अच्छा नहीं मानता भारत का किसी धर्म से बैर नहीं है। इस्लाम धर्म के

अनुयायी अरब व्यापारी भारत में शताब्दियों से आते रहे हैं, उनमें से अनेक यहीं बस गए हैं। भारतवासियों ने उन्हें अपना बन्धु बनाकर रखा है। भारत प्रत्येक धर्म की पवित्रता पर आस्था रखता है और प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वाधीनता प्रदान करता है।

बन्दी किन्तु हम धार्मिक स्वाधीनता को नहीं मानते। जो इस्लाम का अनुयायी नहीं वह पतित है, काफिर है, यही हमारी मान्यता है। हम सारे संसार को अपने धर्म का अनुयायी बनाने की आकांक्षा रखते हैं। इस्लाम की तलवार ने पश्चिम में बुखारा से रोम तक रक्त की नदियाँ बहाई हैं, पूर्व में भी सिन्ध के किनारे तक हमारा झंडा फहराता है। इस्लाम की बाढ़ में भारत का गर्व भी तिनके की तरह बह जायगा। यह हमारा विश्वास है और यही हमारा संकल्प है।

( सूर्यदेवी अपनी तलवार खींचती है। )

सूर्यदेवी मूर्ख ! तेरे सर पर कालमँडरा रहा है।

( सूर्यदेवी बन्दी की तरफ बढ़ती है किन्तु दाहर रोक देता है। )

दाहर शांत, सूर्यदेवी। इसे प्रलाप करने दो। सूर्य पर थूकने से सूर्य का कुछ नहीं बिगड़ता। इसकी मौत, इसे यहाँ ले आयी है इसे यह जानता है, किन्तु इसके रक्त से रंग कर तुम अपनी तलवार को अपवित्र न करो।

( सूर्यदेवी अपनी उठी हुई तलवार को रोक लेती है। )

बन्दी ( हँसता हुआ ) हः हः, मूर्ख है भारत ! जो समझता है कि रक्त पीने से तलवार अपवित्र होती है। इंसान हाथ में तलवार पकड़ता ही इसलिए है कि वह उसे

रक्त से स्नान कराता रहे। मनुष्य को प्यास लगती है उसी प्रकार तलवार को भी। जो देश अपनी तलवारों को प्यास से तड़पाता है वह दुर्बल होकर पराधीन बनता है।

दाहर भारत की तलवार भी रक्त पीना जानती है इसे तुम्हारे देशवाले एक नहीं अनेक बार देख चुके हैं, लेकिन भारतवासी योद्धा हैं—कसाई नहीं। भारत की दो नारियों ने तुम जैसे दस योद्धाओं के छक्के छुड़ा दिए, चार को मौत के घाट उतार दिया, तुमको बन्दी बनाया, शेष दुम दबाकर भाग गए। तुम भारत की तलवार को लकड़ी का टुकड़ा मत समझो। हमारा हृदय नवनीत के समान कोमल है तो वज्र के समान कठोर भी।

क्षपाकर भारत व्यर्थ ही बच्चों की तरह या बर्बरों की भाँति अपनी तलवार घुमाता हुआ नहीं फिरता। उसे और भी अनेक महत्त्वपुर्ण कार्य करने हैं। भारत की चिर पुरातन संस्कृति ने इसे वीर और पराक्रमी के साथ तपस्वी, त्यागी और सहानुभूतिशील बनाया है। इसे सारे संसार को सुख, शांति और प्रेम का संदेश देना है। मैं कहता हूँ, भाई! दूसरों के देशों में जाकर हिंसक पशुओ की भाँति उन्मत्त होकर घूमना छोड़ो। सारे मनुष्य एक हैं—सबको अपने विश्वास, परम्परा और संस्कृति के अनुसार जीवन-यापन करने का अधिकार है इस तथ्य को समझो। हजरत मुहम्मद ने भी यही कहा था। तुम सारे संसार को तलवार के बल पर अपना दास नहीं बना सकते। एक पड़ौसी की भाँति प्रेमपूर्वक हमारे साथ रहो तो हम तुम्हारी मंगल कामना करेंगे।

सूर्यदेवी आप भेड़ियों को सभ्य बनाना चाहते हैं ?

दाहर खैर, जाने दो इन बातों को। बन्दी तुम्हारा नाम क्या है?

बन्दी नाम जानकर ही क्या होगा और जो व्यक्ति कुछ क्षणों बाद इस संसार से बिदा ले लेनेवाला है वह नाम बताने की आवश्यकता नहीं समझता।

क्षपाकर तुमने कैसे मान लिया कि हम तुम्हें मार ही डालेंगे।

बन्दी मेरे देश में शत्रु पर दया नहीं की जाती, न मैं आपसे आशा करता हूँ कि आप मुझ पर दया करेंगे।

क्षपाकर किन्तु, तुम हमारे मित्र भी बन सकते हो।

बन्दी मित्र ? तो क्या आप इस्लाम पर विश्वास करने को प्रस्तुत हैं ? मैं केवल इस्लाम का मित्र हूँ। जो इस्लाम पर विश्वास नहीं करता वह मेरा शत्रु है।

परमाल तो तुम अपने प्राणों की रक्षा नहीं चाहते ?

बन्दी जो इस्लाम के प्रसार के लिए प्राण देता है उसे जन्नत में स्थान मिलता है इसीलिए हम सर पर कफन बाँध-कर निकलते हैं।

दाहर तुम्हारा पोत कहाँ से, किस उद्देश्य से आया है और उनका गन्तव्य स्थान कौन-सा है ?

बन्दी मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं समझता।

दाहर मैं तुम्हारी दृढ़ता से प्रसन्न हुआ, यदि तुमने भारत में जन्म लिया होता तो तुम्हारी दृढ़ता किसी भले काम में लगती। खैर, अब मेरे सामने तुम पर दया करने का कोई मार्ग नहीं है फिर भी मैं तुम्हें सोचने का कुछ समय और देता हूँ। (क्षपाकर से) मंत्रीजी, इसे ले जाओ बन्दीगृह में। हाँ, उस पोत पर हमें अधिकार करना ही होगा। इसका तुरन्त प्रबन्ध करो।

क्षपाकर महाराज की आज्ञा का पालन होगा ।

(क्षपाकर बन्दी को फिर बंधनों में बाँध देता है । क्षपाकर बन्दी को लेकर एक तरफ से और शेष सभी दूसरी ओर से प्रस्थान करने लगते हैं । इसी समय राजकुमार जयसिंह एक बन्दी के साथ प्रवेश करता है । उसकी आयु लगभग २५ वर्ष की है । भव्य और बलिष्ठ आकृति उसके व्यक्तित्व की विशेषता है । बन्दी की आयु लगभग चालीस वर्ष की है । उसकी वेशभूषा अरबों से कम और भारतीयों से अधिक मिलती है)

जयसिंह महाराज के चरणों में जयसिंह नमस्कार करता है ।

(सभी लोग जाते-जाते रुक जाते हैं ।)

दाहर यह तुम किसे बन्दी बना लाए हो, राजकुमार !

जयसिंह भारत की सीमा में अनधिकार अतिक्रमण करनेवाले एक अपराधी को । यह पोत का नायक है जिस पर वे व्यक्ति थे जिनसे राजकुमारियों की मुठभेड़ हुई थी ।

सूर्यदेवी किन्तु, भैया तुम वहाँ ?

परमाल तुम हमारी गतिविधियों का भेद लेनेके लिए हमारा पीछा करते रहते हो । हम पर विश्वास नहीं है तुम्हें ?

जयसिंह मैं एक बार भगवान् पर विश्वास न करूँ किन्तु अपनी बहनों पर मेरा विश्वास अटल है । तुम्हें जो अपने ऊपर आवश्यकता से अधिक विश्वास है उससे महाराज चाहे आँखें मूँदे रहें किन्तु मेरे लिए तो वह चिन्ता का कारण है । तुम्हें कभी अपनी सुरक्षा का ध्यान नहीं रहता । तुम सदा ही विपत्तियों की खोज में रहती हो ।

सूर्यदेवी और तुम विपत्ति में हमारा रक्षा-कवच बनने के लिए हमें बताए बिना हमारा पीछा करते रहते हो ।

परमाल किन्तु यह तो हमारा अपमान है । तुम पुरुष हो इस

लिए नारियों को निर्बल समझते हो। तुम भाई हो इसलिए हम तुम्हें क्षमा करती हैं। कोई और होता तो तलवार के दो हाथ करती और सिद्ध करती कि रक्षा-कवच की आवश्यकता हमें नहीं हमारी रक्षा करने के ठेकेदारों को है।

सूर्यदेवी अपनी रक्षा करने की अहर्निश चिन्ता करना अपने-आप को निर्बल बनाना है, भैया! हम भारतवासी केवल अपनी रक्षा करने की बात सोचते हैं इसीलिए दुर्गों में रहकर आक्रमणकारी से संग्राम करते हैं। इस से लाभ क्या होता है? अधिक से अधिक यही कि शत्रु शिलाखंडों से सिर फोड़ते थक जाता है और लौट जाता है अधिक बल संचय कर पुनः आने के लिए कितनी बार हमने इन अरबों के दाँत खट्टे किए हैं किन्तु क्या इनका दुस्साहस कम हुआ है? क्यों नहीं हम इन लुटेरों के घर में पहुँचकर वहाँ प्रलय का दृश्य उपस्थित करते? युद्ध की आँच का परिचय शत्रु के नगर और ग्रामों को भी मिलना चाहिए। आक्रमण करना ही सुरक्षा का अचूक साधन है।

दाहर ओहो, तुम भाई-बहनों के विवाद में मुख्य बात तो विलीन ही हो गई। राजकुमार! तुम इस बन्दी को क्यों पकड़ लाए हो और तुमने ऐसा क्यों किया?

जयसिंह केवल इनको ही नहीं, मैंने पोत के अन्य लोगों को भी बन्दी बनाया है। उन्हें बन्दीगृह में रखकर इन्हें आप की सेवा में ले आया हूँ क्योंकि ये उन सबसे भिन्न हैं और इनसे भिन्न प्रकार का व्यवहार होना चाहिए।

क्षपाकर किन्तु आपने ऐसा क्यों किया, राजकुमार!

जयसिंह राजकुमारियों के साहस की गाथा तो आप उनके मुख

से सुन चुके होंगे किन्तु यह गाथा वहीं समाप्त होने वाली न थी। जो नीच भगोड़े पोत पर पहुँचे वे अपने साथियों को साथ ले राजकुमारियों पर धावा बोलने के मनसूबे बाँधने लगे किन्तु मैं अपने दल के साथ जा पहुँचा और उन्हें धर दबोचा।

दाहर (नवीन वन्दी से) तुम्हारा नाम।

श्रीवत्स श्रीवत्स।

दाहर निवास-स्थान।

श्रीवत्स श्रीलंका।

क्षपाकर तो आप श्रीलंका-निवासी हैं अरबों से आपका सम्बन्ध ?

श्रीवत्स मित्रता का।

दाहर आश्चर्य ! श्रीलंका और अरब मित्र।

सूर्यदेवी और भारत आपका शत्रु।

श्रीवत्स नहीं, भारत और लंका तो अनन्य मित्र हैं।

जयसिंह मित्र का शत्रु तुम्हारा भी शत्रु होना चाहिए।

श्रीवत्स किन्तु अरब भारत के शत्रु हैं इसका श्रीलंका को ज्ञान नहीं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक देश की अपनी परि-स्थितियाँ होती हैं। श्रीलंका की परिस्थितियों को भी समझने का यत्न कीजिए महाराज ! श्रीलंका के व्यापारिक पोत जो पश्चिमी देशों को जाते हैं-अरब लुटेरों द्वारा लूट लिये जाते हैं।

क्षपाकर यह संकट तो भारतीय पोतों पर भी है।

श्रीवत्स श्रीलंका इस तथ्य को जानता है किन्तु भारत की बात भारत को सोचना चाहिए। श्रीलंका के महाराज ने बगदाद के खलीफा से अनुरोध किया था कि वह अरब सागर में हमारे पोतों की रक्षा का प्रबन्ध करें।

परमाल बिल्ली को दूध की रखवाली का कार्य सौंपा जा रहा है।

श्रीवत्स अन्य उपाय है ही क्या? खलीफा ने अपने प्रतिनिधि चर्चा करने के लिए भेजे थे, उन्हें ही वापस पहुँचाने और श्रीलंका की ओर से कुछ रत्न खलीफा को भेंट करने मैं जा रहा था। बस इतना ही सम्बन्ध मेरा इनके साथ है।

जयसिंह तो उत्कोच देकर श्रीलंका अरबों से अपने पोतों की रक्षा चाहता है, किन्तु यह मूर्खता है। तुम इन अरबों की सर्वग्रासी भूख को उत्कोच देकर और भी तीव्र कर रहे हो।

सूर्यदेवी साँप को दूध पिलाने से न तो उसका विष समाप्त होता है और न उसका डसने का स्वभाव।

परमाल अभी श्रीलंका को अरब आक्रमण से पाला नहीं पड़ा; इसी कारण अभी वह अरबों की मानवता पर विश्वास करता है। ये नर-पशु प्रतिज्ञा और सन्धियों का मूल्य ही क्या समझते हैं? यह तो भारत ही है जो प्राण पर प्राण देता है।

दाहर तो तुम भारत की उपेक्षा कर अरबों से मित्रता की सन्धि करना चाहते हो?

श्रीवत्स मैं नहीं, महाराज! श्री लंका।

जयसिंह श्रीलंका नहीं, श्रीलंका के महाराज। किन्तु, याद रखो, श्रीवत्स श्रीलंका के महाराज श्रीलंका नहीं हैं। क्या श्रीलंका की प्रजा अरबों को उत्कोच देकर मित्र बनाना चाहती है।

श्रीवत्स कम से कम व्यापारी वर्ग, क्योंकि अरबों के उत्पात से उनकी ही हानि अधिक है, वैसे तो सारे देश की है।

श्रीलंका के व्यापार की हानि का प्रभाव संपूर्ण राज्य की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है।

दाहर किन्तु अरबों की तृष्णा और आकांक्षाएँ सुरसा के मुँह की तरह विराट् रूप धारण करती रहेंगी, इसका परिमार्जन संतुष्ट करने का प्रयत्न करने से नहीं होगा अभी तक संसार में इन्हें कहीं इनकी नृशंसता और बर्बरता का उचित उत्तर नहीं मिला है। भारत और श्रीलंका मिलकर इनके होश ठिकाने ला सकते हैं, ईंट का उत्तर पत्थर से दे सकते हैं। हमें हिंसा का उत्तर हिंसा से ही देना होगा। श्रीलंका को भारत का साथ देना चाहिए।

श्रीवत्स यह भारत कह रहा है या सिन्ध-नरेश दाहर ? भारत अपनी शक्ति और कर्तव्य को भूला रहे ती हम क्या करें ? यदि भारत अपनी शक्ति का उपयोग करने का साहस करे तो क्यों श्री लंका जैसे छोटे देश इन अरबों के प्रति मित्रता का हाथ बढ़ायें ? आपका देश महान् है—महादेश ही कहिये इसे लेकिन, मुझे क्षमा कीजिये, मैं तो कहूँगा कि वह श्रीलंका से भी छोटा है।

क्षपाकर श्रीलंका से भी छोटा ?

श्रीवत्स और नहीं तो क्या ? जब आपके सिन्ध की सीमा में अरब सेनाएँ आईं तब भारत की विशालता कहाँ लोप हो गई ? सिन्ध के अतिरिक्त अन्य राज्य का एक भी भारतीय योद्धा आपसे कंधा-से-कंधा भिड़ाकर शत्रु से लोहा लेने आया क्या? अरबों की आँधी अपने धर्म का झंडा लेकर सारे संसार पर छा रही है, इस आँधी को रोकने की शक्ति यदि किसी देश में है तो वह भारत में ही है। मौर्य और गुप्तों का भारत कहाँ है ? एक

भारत--विशाल भारत--संगठित भारत। दुर्बल का साथ कोई नहीं देता, महाराज ! उदय होते हुए सूर्य को सभी नमस्कार करते हैं।

दाहर (भाव-विह्वल होकर) श्रीवत्स ! तूम ठीक कहते हो। यह सूर्य के समान प्रखर तेजवान् भारत खंड-खंड होकर छोटे-छोटे टिमटिमाते दीपकों के समान बन गया है। प्रभंजन के झोंके एक-एक कर सभी दीपकों को बुझा देंगे। हम व्यक्तिगत स्वार्थों में लिप्त अपनी माँ के अंगों को काट रहे हैं। (अरब बन्दी मुसकराता है।)

बन्दी तब महाराज जानते हैं कि भारत में सामर्थ्य नहीं कि वह अरबों की आँधी को रोक पाये, फिर व्यर्थ ही हमें चुनौती देने का यत्न क्यों किया जाता है ? आप मेरे प्राण ले लेंगे, मेरे साथियों के भी, किन्तु याद रखिए इसका मोल आपको चुकाना पड़ेगा। आपको ही नहीं संपूर्ण सिन्ध को, सिन्ध को ही क्यों एक दिन संपूर्ण भारत को। (बन्दी अट्टहास करता है।)

सूर्यदेवी चुप रहो निर्लज्ज।

बन्दी मैं मानता हूँ कि निर्लज्ज तो हम हैं, मानवता भी कदाचित् हम में नहीं है पर हमें इसका पछताव नहीं है, राजकुमारी ! आप हमारा मस्तक काट लें, किन्तु हमारे अट्टहास को नहीं रोक सकतीं। हम संसार में कुत्सित-से-कुत्सित कार्य करते हैं, इसे हम मानते हैं—किन्तु हमारे जीवन की प्रत्येक साँस में एक आस्था है, एक विश्वास है जिससे हम बल पाते हैं—मस्तक काटने का और मस्तक कटवाने का। आज संपूर्ण अरब नवीन उत्तेजना से प्रमत्त है। उसने संपूर्ण संसार

में तूफान पैदा कर दिया है। भारत उसकी उत्ताल तरंगों से जूझेगा तो अपनी मौत को बुलायेगा।

दाहर भारत आज चंद्रमा की भाँति शीतल है, इससे उसके रूप का गलत अनुमान न लगाओ, बन्दी ! याद रखो, प्रत्येक भारतवासी एक चलता-फिरता ज्वालामुखी है। अरब उसकी लपटों से दूर रहे इसी में उसका कल्याण है, अन्यथा भारत की धरती पर अरब के सारे स्वप्न क्षार हो जायँगे। (जयसिंह से) जयसिंह ले जाओ इस बन्दी को बन्दीगृह में। (जयसिंह अरब बन्दी को ले जाता है।)

दाहर ( श्रीवत्स से ) श्रीवत्स ! इन अरबों के अपराध के लिए हम तुमको दोष नहीं दे सकते। ( क्षपाकर से ) इनके बंधन खोल दो। ( क्षपाकर श्रीवत्स के बंधन खोलता है। दाहर आगे बढ़कर श्रीवत्स का हाथ पकड़ता है। )

दाहर श्रीलंका और भारत मित्र हैं किन्तु अभी भारत अपने मित्रों से मित्रता प्राप्त करने का अधिकारी नहीं। यह सिंह अपने पंजों का प्रयोग करना ही भूल गया है इसलिए गीदड़ भी इसे आँख दिखाते हैं। हम तुम्हारे पोत को छोड़ देंगे।

श्रीवत्स और इन अरबों को ?

दाहर उनके साथ हमारे राज्य के विधि-विधान के अनुसार व्यवहार होगा। मुझे उन्हें क्षमा करने का कोई अधिकार नहीं। अब अंधकार छाने लगा है—हमें चलना चाहिए, आज तुम्हें मेरा आतिथ्य स्वीकार करना पड़ेगा। चलिए मेरे साथ। (सब का प्रस्थान)

(पट-परिवर्तन)

# दूसरा अंक

[स्थान—सिन्धुनद के पूर्वी तट पर दाहर का एक सैन्य शिविर। समय–प्रातःकाल के कुछ पश्चात्। नेपथ्य से सिन्धुनद का तुमुल नाद सुनाई दे रहा है। घोड़ों की हिनहिनाहट एवं हाथियों के चिंघाड़ की आवाजें भी सुनाई देती हैं जिससे जान पड़ता है कि सैनिक-शिविर निकट ही अवस्थित है। जयसिंह और क्षपाकर सैनिक परिधान में प्रवेश करते हैं। दोनों के हाथों में नंगी तलवारें हैं तथा कंधों पर धनुष तथा पीठ पर वाणों से भरे हुए तूणीर हैं। ]

क्षपाकर राजकुमार ! वही हुआ जिसकी मुझे आशंका थी। मैं जानता था कि बगदाद का खलीफा यूनान के सिकंदर महान् की भाँति ही विश्व-विजय का स्वप्न देखता है। अपने स्वप्न को सत्य करने लिए उसने अरबों को धार्मिक उन्माद से उत्तेजित कर संसार को आतंकित कर रखा है। भारत ही एक ऐसा देश है जो अरबों के आक्रमण से अभी तक अप्रभावित रहा है, किन्तु हमने जानबूझ कर उसकी प्रचंड-वाहिनी का मुख इस ओर मोड़ लिया है।

जयसिंह हमने मोड़ लिया है अर्थात् 'आ बैल मुझे मार' कहावत को हम चरितार्थ कर रहे हैं। आपका आशय है कि हमने स्वयं ही इस युद्ध को आमंत्रित किया है। क्या हम रण-पिपासु हैं ?

क्षपाकर रण-पिपासु तो कदाचित् नहीं हैं। भारत सदा अपनी सीमाओं से संतुष्ट रहा है। यह ज्ञान का दीपक लेकर विदेशों में गया है, तलवार लेकर नहीं। किन्तु इस समय जिस ज्वाला को हम व्यवहार-कुशलता से शान्त कर सकते थे उसे हमने घी डालकर अधिक प्रज्ज्वलित कर दिया है। यदि हम खलीफा के व्यक्तियों को मुक्त कर देते तो उसे भारत पर आक्रमण करनेका बहाना ही नहीं मिलता। क्षमा और प्रेम से हम खलीफा को अपना मित्र बनाकर रख सकते थे--जिस प्रकार श्रीलंका आदि देशों ने किया है।

जयसिंह मंत्रीजी, आप काग को हंस बनाने का स्वप्न देखते हैं। बड़े खेद की बात है कि आपके मुख से ऐसी कायर-पूर्ण वाणी उच्चरित हो रही है। हमारे देश में आकर बर्बर विदेशी लोग लूटपाट तथा नारियों का अपमान करें और हम उन्हें दण्ड भी न दें, यह क्या भारत जैसे सभ्य और विशाल देश के गौरव के अनुकूल है?

क्षपाकर नहीं है, किन्तु युवराज जयसिंह! भारत के गौरव और स्वाभिमान की रक्षा के लिए सिन्धुनद का पानी रक्त से लाल हो और शेष भारत सुख की नींद सोता रहे क्या यह अनुचित नहीं है? आग में जलने के लिए केवल सिन्ध प्रदेश है और शेष भारत इस आग में अपने हाथ सेकता रहे? सिन्धु के हृदय पर जो आघात हुआ है क्या वह गंगा-यमुना और नर्मदा-कवेरी के हृदय पर नहीं है? खलीफा के साथ उसके सारे स्वधर्मी राष्ट्र हैं। वह अकेला नहीं है किन्तु हम केवल अकेले ही नहीं अपूर्ण भी हैं। सिन्ध प्रदेश में भी ऐसे देशद्रोही हैं जो शत्रु के पक्ष में हैं, मानों भारत की

केवल आधी भुजा एक बर्बर राक्षसी शरीर से युद्ध कर रही है। निश्चय ही भारत प्रचंड शक्ति है किन्तु कुंभकर्णी निद्रा में लीन। कोई उसके शरीर का एक भाग काट लेगा तब भी वह न करवट बदलेगा, न आँख खोल कर देखेगा। (सूर्यदेवी और परमाल पुरुष वेश में शस्त्रों से सज्जित प्रवेश करती हैं।)

सूर्यदेवी किन्तु हमें भारत की आँखें खोलनी ही होगी, मंत्रीजी! एक युग हो चुका भारत को विदेशियों से लोहा लिए हुए। यूनानी, शक और हूणों के गर्व को चूर्ण करनेवाले चन्द्रगुप्त और विक्रमादित्य के वंशजों को नींद से जगाने का कार्य आवश्यक है। भारत माता वीर प्रसू है किन्तु आज उसके पुत्र असावधानी की निद्रा में लीन हैं। सिन्ध अपना बलिदान देकर उसकी आँखें खोलेगा। भारत के सुप्त शौर्य को जाग्रत करने लिए हमें मिट जाना होगा। हाँ, एक नवीन भारत को जन्म देने के लिए हमें मरना होगा।

जयसिंह तो तुम समझती हो कि हम केवल बलि होने के लिए युद्ध-रत हैं, विजय पाने के लिए नहीं।

परमाल हम युद्ध कर रहे हैं पराक्रमपूर्वक। हमारे योद्धा अपनी सेना से कई गुनी अधिक सेना के साथ शौर्यपूर्वक लोहा ले रहे हैं किन्तु हमारा युद्ध रक्षात्मक है। पिताजी अलोर के दुर्ग में शत्रु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। अलोर की रक्षा कर लेने से संपूर्ण सिन्ध प्रदेश का संकट समाप्त हो जायगा। सिन्ध प्रदेश में शत्रु विनाश का तांडव कर रहा है। गाँवों में आग लगा रहा है। युद्ध में भाग न लेनेवाली निरीह प्रजा का, यहाँ तक कि वृद्धों और बालकों का भी, वध कर रहा है और

महाराज प्रतीक्षा कर रहे हैं कि शत्रु अलोर दुर्ग पर आक्रमण करे तो निर्णायक युद्ध किया जाये ।

सूर्यदेवी (व्यंगपूर्वक) और हमारी बुद्धि में गणेश के समान मंत्रीजी के परामर्श से हमने सिन्ध प्रदेश का सिन्धुनद के पश्चिम तट का संपूर्ण भाग बिना युद्ध किए ही छोड़ दिया है । और अब महाराज ने युवराज पर यह उत्तरदायित्व थोपा है कि वह शत्रु को सिन्धु के इस पार न जाने दें । इतने लंबे सिन्धु-तट की चौकसी करना क्या बच्चों का खेल है ? कभी सोचा इसे ?

क्षपाकर राजकुमारी, तुम्हारा क्षोभ स्वाभाविक है किन्तु हमें जोश में होश नहीं गँवा देना चाहिए । साधारण दृष्टि में हमारा सिन्धुनद के पश्चिम तट पर से हट आना हमारी दुर्बलता का द्योतक है, शत्रु तो यही सोच रहा होगा, किन्तु तुम्हें तो भ्रम नहीं होना चाहिए । गहराई से सोचने पर शत्रु को फँसाने का यह एक जाल सिद्ध होगा ।

सूर्यदेवी जाल ? यह जाल हमारे लिए आत्महत्या का उपकरण बनेगा ।

क्षपाकर नहीं, राजकुमारी! प्रकृति ने जो सुविधा हमें प्रदान की है उसका लाभ उठाना आत्महत्या नहीं है । ये बरसात के तूफानी दिन हैं शत्रु की सेना सिन्धुनद को पार करने का यत्न करेगी तो वह हमारी बाण-वर्षा से और सिन्धुनद के प्रकोप के दोहरे प्रहार से ध्वस्त होगी इसमें संदेह क्या है ? युद्ध करने का अर्थ पागलों की भाँति आक्रमण कर सर काटना या कटाना नहीं है। कम -से कम हिंसा कर और स्वयं भी न्यूनतम जन-हानि उठा कर हम शत्रु के साहस को समाप्त कर सकें इसी में हमारी विजय है । हमें यह तो देखना चाहिए कि हमारी

सेना संख्या में सीमित है। हम नितान्त एकाकी हैं अपनी शक्ति और साधनों का अधिक-से-अधिक प्रभावशाली ढंग से उपयोग करने में ही रण-कौशल है।

परमाल  रहने दो मंत्रीजी, अपना यह रण-कौशल। आप आधा सिन्ध प्रदेश शत्रु को देकर विजय की बात कर रहे हैं। मुझे तो हँसी आती है आपकी बुद्धि पर। एक दिन पुरु ने भी सोचा था कि सिकंदर उद्दाम वेग से प्रवाहित प्रलयकारी वितस्ता को पार नहीं कर पायगा–किन्तु दुस्साहसी सिकंदर को वितस्ता की भयंकर लहरें भी न रोक पाईं। तक्षशिला के राजा आम्भी के सहयोग से वह इस पार आ ही गया।

सूर्यदेवी  और वही बात यहाँ होनेवाली है। सिन्धुनद खलीफा की सेना के मार्ग को अवरुद्ध नहीं कर सकेगा।

जयसिंह  भविष्य के गर्भ में क्या है, बहन, यह हम नहीं जानते। किन्तु परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर रणनीति स्थिर करनी होगी। हमें अपना कुछ प्रदेश खाली करना पड़ा इसका यह अर्थ नहीं कि हम पराजित हो गये हैं। मंत्रीजी का कथन ठीक है कि हमारी शक्ति सीमित है। सिन्धु के पश्चिम तट के प्रदेश की रक्षा करने के लिए अधिक सैन्य-दल की अपेक्षा है, यही सोचकर इन्होंने सिन्धु के पूर्ववर्ती तट की रक्षा करते रहने का सुझाव दिया है। यही सुविधाजनक है।

परमाल  सबसे अधिक सुविधाजनक होता शत्रु के प्रदेश में घुसकर युद्ध करना। देश के जिस भाग में युद्ध हो वहाँ के नगर और ग्रामों का भी विनाश होता। यह विनाश अपनी भूमि में क्यों होने दिया जाय? हमें शत्रु के प्रदेश को रणभूमि बनाना चाहिए--और यदि

हम ऐसा न कर पायें तो हमें शत्रु को सीमा पर ही रोकना चाहिए। दुर्गों और नदियों की रक्षा के साधन बनाकर पीछे हटकर युद्ध करना आधी पराजय स्वीकार कर लेना है।

जयसिंह तो क्या अब हमें युद्ध करना छोड़कर शत्रु से सन्धि कर लेनी चाहिए क्योंकि तुम्हारे कथन के अनुसार आधी बाजी तो हम हार चुके हैं—और आगे क्या होगा यह संदिग्ध है।

सूर्यदेवी छिः, कैसी बात करते हो, भैया! मैं रक्षात्मक युद्ध के पक्ष मे नहीं थी किन्तु नक्कारखाने में हमारी तूती की आवाज कौन सुनता है, हमें नारी होने का दंड दिया जाता है। आप लोग पुरुष हैं, देश के भाग्य-विधाता। आपके अधिकार क्षेत्र में हम कैसे प्रवेश पातीं। अब जो हो चुका है उसे मिटाया नहीं जा सकता। युद्ध तो हमें करना ही होगा। हम मस्तक लुटा देंगे—झुकाएँगे नहीं शत्रु के आगे मस्तक नत कर सन्धि करना भारत के गौरव के विपरीत है। बलिदानों की नींव पर राष्ट्रों का पुनर्निर्माण होता है।

क्षपाकर आप क्या यह चाहती थीं कि हमें अरब देश पर आक्रमण करना चाहिए था?

सूर्यदेवी मेरे कहने का तात्पर्य यह था कि जब खलीफा ने हमें चुनौती दी थी कि उसके आदमियों को मुक्त कर दिया जाय अन्यथा भारत को बगदाद की तलवारों का सामना करना पड़ेगा तभी हमें अपनी सेनाएँ सीमांत पर लगा देनी थीं। शत्रु को अपनी सीमा में प्रवेश करने का अवसर हमें देना ही चाहिए था। एक-एक पग भूमि के लिए उसे सहस्रों मस्तक कटाने पड़ते।

हमने आक्रमक-वृत्ति अपनाई होती तो प्रजा का भी मनोबल बढ़ता और वह भी हमारे साथ होती।

परमाल और अब स्थिति यह है कि शत्रु ने आधे सिन्ध प्रदेश को हस्तगत कर वहाँ की प्रजा के एक भाग को प्रलोभन और आतंक से अपने प्रभाव में कर लिया है साथ ही शेष भाग को अत्याचार और आतंक से निष्क्रिय कर चुका है। आज सारे बौद्ध खलीफा के सेनापति मुहम्मद बिनकासिम के साथ हैं। घर का भेदी लंका ढावेवाली बात है। हमारी रक्षा-पंक्ति में दरार पड़ चुकी है।

क्षपाकर राजकुमारी, मैं अपनी इसी निर्बलता का अनुभव कर युद्ध को इस समय टाल जाना चाहता था। युद्ध मोल लेने के पहले हमें देश में एकता स्थापित करना आवश्यक था। भारत का दुर्भाग्य है कि हम राष्ट्र का, अपने देश का महत्व नहीं समझते। हम धर्मों के नाम पर परस्पर ही युद्ध करने में अपने पराक्रम का अपव्यय करते हैं। बौद्धधर्म ने इसी भूमि में जन्म लिया है, वैदिक धर्म ने भी—यह देश बौद्धों का भी उतना ही है जितना वैदिकधर्मावलंवियों का तब बौद्धधर्मावलंबी शत्रुओं का साथ देने में अपना क्या हित सोचते हैं यह वे ही जानें। मैं देश की इन परिस्थितियों से परिचित हूँ। इसीलिए मेरा परामर्श यही रहा है कि जहाँ तक बने संघर्ष से बचा जाय।

सूर्यदेवी यह तो मूर्खता और पामरता की पराकाष्ठा है।

जयसिंह सूर्य ! मंत्रीजी से बात करते हुए शिष्टाचार को न भूल जाना चाहिए।

सूर्यदेवी मैं अपनी धृष्टता के लिए क्षमा माँगती हूँ। साथ ही निवेदन करती हूँ कि जिसके हृदय में जरा भी

स्वाभिमान और देश-प्रेम है वह मातृभूमि के छोटे-से भाग को भी पद-मर्दित होते देखकर व्यथित और उन्मत्त हो उठता है। वही स्थिति मेरी है। हमने गत शताब्दियों में भयंकर भूलें की हैं और धर्म के नाम पर रक्त की नदियाँ बहाई हैं। हाँ, अपने ही बंधुओं के रक्त की नदियाँ। अब इसके परिणामों से कैसे बचा जा सकता है? जैसे बीज बोए गए हैं वैसे ही फल भी लगेंगे।

परमाल प्रियदर्शी अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एवं हर्षवर्धन जैसे महान् शासकों ने देश की एकता के महत्व को समझा और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देकर देश को महान् शक्तिशाली बनाया तब भारत की तरफ आँख उठाने का किसी को साहस नहीं हुआ और किसी ने दुस्साहस किया तो उसे मुँह की खानी पड़ी। दुर्भाग्य है भारत का कि अब वह एकता का सूत्र टूट गया। भविष्य की कल्पना कर मेरा हृदय टूक-टूक हो जाता है, भैया!

जयसिंह तब क्या इस देश की रक्षा का कोई उपाय नहीं है?

परमाल भैया! आष हमसे बड़े हैं-मंत्रीजी और पिताजी भी! हमसे अधिक आप लोग इस सम्बन्ध में सोच सकते हैं, हम पारस्परिक युद्धों में शक्ति और समय गँवाते रहे हैं। जब अरबों की तलवारें मध्य एशिया में रक्त की नदियाँ बहा रही थीं और ये रक्त की नदियाँ भारत की सीमा को भी छुने लगी थीं तभी भारत के शासकों और प्रजा को सोचना था कि रक्त की बाढ़ भारत की शान्ति और सुरक्षा को बहाने आएगी।

सूर्यदेवी शासक को केवल अपनी सीमा के अन्दर की स्थिति से ही सुपरचित नहीं रहना चाहिए अपितु संसार की गतिविधियों के प्रति भी अत्यधिक सचेत रहे। केवल

सिन्ध को ही नहीं शेष भारत को भी विदेशियों की बाढ़ को रोकने के उपाय करने चाहिए थे। संगठित होकर अरब आँधी का प्रतिरोध करना हमारा धर्म था। किन्तु सोचने का अब समय कहाँ है, अब तो हमें अपनी नासमझी का मोल चुकाना ही पड़ेगा। प्रायश्चित करना होगा। शेष भारत की निद्रा भंग करने के लिए युद्धाग्नि में सिन्ध की आहुति देनी होगी। और जो देश से द्रोह कर रहे हैं उन्हें समय दंड देगा। बौद्ध समझते होंगे कि शत्रु सिन्धप्रदेश का राज्य उनको दान कर जायँगे तो यह उनकी भूल है। जो तलवारें आज हमारी गर्दनों पर तनी हैं वे ही कल उनकी गर्दनों पर प्रहार करेंगी, तब वे समझेंगे कि देशद्रोह करना केवल महान् पातक ही नहीं मूर्खता की पराकाष्ठा भी है।

क्षपाकर यह सब देखकर मुझे तो भारत का भविष्य बहुत अन्धकारमय प्रतीत होता है। मुझे प्रकाश की एक क्षीण रेखा भी नहीं दिखाई देती।

सूर्यदेवी ईश्वर न करे सिन्धप्रदेश को पराधीनता के पाश में बद्ध होना पड़े। यदि ऐसा हुआ तो वास्तव में भारत में भयानक कालरात्रि का आगमन होगा कभी-कभी आकाश के एक कोने में दिखाई देनेवाली घटा विराट् रूप धारण कर सारे आकाश को आच्छन्न कर लेती है। दुर्भाग्य, सिन्ध के पतन पर ही नहीं रुक जायगा। इसके चरण रुकेंगे नहीं–पंचनद की ओर बढ़ेंगे–और दिशा बदल कर काम रूप तक पहुँचेंगे। कहावत है कि दुख बुढ़िया के मरने का नहीं इस बात का है कि मौत ने घर देख लिया।

परमाल इतनी निराश तो मैं नहीं हूँ यह सच है कि भारत को अपने प्रमाद का मोल चुकाना पड़ेगा, किन्तु मार

खाकर ही यह देश होश में आयगा। संभव है, हम सिन्ध प्रदेश की रक्षा करने में सफल न हो पायें, फिर भी हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं होगा। सिन्ध के वीर सेनानी अपने रक्त से एक रेखा खींच जायँगे, जो भारत की भाग्य-रेखा बनेगी। हम रक्तिम अक्षरों में अपनी आगामी पीढ़ी को सचेत रहने का संदेश दे जायँगे। मुझे आशा है कि सिन्ध का बलिदान भारत को नींद से जाग्रत करेगा जिससे भारत का दुर्भाग्य अपने अशुभ चरण कदाचित् आगे नहीं बढ़ा पायगा।

जयसिंह कदाचित् तुम ठीक कहती हो, बहन! जब हम युद्ध करते करते बलि हो जायँगे और शत्रु सिन्ध प्रदेश पर छापे जायँगे तथा आगे बढ़ना चाहेंगे तभी शेष भारत सचेत होगा। अभी तो कूप-मंडूक बने हुए—अपनी छोटी-छोटी सीमाओं में लोग अपने आप को सुरक्षित समझ रहे हैं। जब शत्रु-दल की आँधी सिन्ध प्रदेश के आगे बढ़ेगी तब देश को वास्तविक संकट का अनुभव होगा, वह अपनी स्वनिर्मित सीमाओं को तोड़, एक सूत्र में बँध कर शत्रु के दाँत खट्टे करेगा।

सूर्यदेवी दुर्भाग्य की कालीघटाओं में यही तो आशा की उज्ज्वल रजत रेखा है। कहने को हिमालय से हिन्द महासागर तक सारा भारत संस्कृति, इतिहास और भावना के त्रिसूत्रों से बनी शक्तिशाली रज्जु से बँधा हुआ है, फिर भी हम खंड-खंड हैं।

परमाल प्रत्येक भारतवासी एक ही परिवार का सदस्य है— संवेदना और सहानुभूति की अटूट शृंखलाओं से आबद्ध और एक दूसरे के लिए त्याग करने और बलिदान देने के लिए आतुर, जब तक ऐसी स्थिति

नहीं बनती हम महान् होकर भी अपमानित होते रहेंगे। हम अध्यात्म और दर्शन की बात करते हैं किन्तु अपने देश की मिट्टी का महत्व नहीं समझते मैं तो कहती हूँ कि देश की मिट्टी का महत्व भगवान् से अधिक है और देश की स्वाधीनता के लिए संग्राम करते हुए वीर-गति पाना मुक्ति-लाभ से भी अधिक गौरवपूर्ण है। हम मुक्ति प्राप्त करने के उन्माद में अपने ही नहीं अपने राष्ट्र के शरीर को जर्जर कर रहे हैं।

( दाहर का गुप्तचर बलदेव प्रवेश करता है। वह बौद्धभिक्षु के वेश में है। उसे देखते ही सूर्यदेवी तलवार तानकर उसकी ओर बढ़ती है। )

सूर्यदेवी तुम्हारी मृत्यु तुम्हें यहाँ ले आयी है। देश द्रोही बौद्धों के रक्त की प्यासी यह तलवार तुम्हारे रक्त से अपनी प्यास बुझायेगी ( बलदेव अपना मस्तक झुका देता है। )

बलदेव राजकुमारी के हाथ से मुझे मृत्यु प्राप्त हो इससे बड़ा सौभाग्य सिन्ध नरेश सेवक बलदेव का और क्या हो सकता है ?

क्षपाकर कौन, बलदेव ? इस वेश में ?

बलदेव गुप्तचर तो अनेक वेश बनाता ही है और विभिन्न प्रकार के अभिनय भी उसे करने पड़ते हैं। बिना बौद्धभिक्षु बने क्या मैं शत्रु-शिविर में जा सकता था !

सूर्यदेवी ( तलवार को म्यान में करती हुई ) शत्रु को टोह लेने के लिए तुम्हारा यह वेश सुविधाजनक हो सकता है किन्तु यहाँ तो तुम्हारे प्राणों के लाले पड़ जाते।

बलदेव राजकुमारी, आपका रक्त बहुत गरम है। गरम रक्त कभी-कभी मित्रों को भी शत्रु बना लेता है। मैं बौद्ध

तो नहीं हूँ किन्तु बौद्धभिक्षु के छद्मवेश में भी कुछ ऐसा आभास होता है, मानो भगवान् बुद्ध की आत्मा की कोई किरण मेरे अन्तर्जगत् में समाविष्ट हो गयी है। आप जो देखते ही भूखी सिंहनी की भाँति मुझ पर टूट पड़ी इससे मैंने अनुभव किया कि हम बौद्धों से कितनी घृणा करते हैं। यही घृणा उन्हें शत्रु के शिवर में पहुँचाती है। यदि हम उन्हें प्रेम से अपनाएँ तो वह रूठकर शत्रु के पास क्यों जायँ ? देशद्रोही निश्चय ही पातक हैं किन्तु हमें सोचना चहिए कि किसी को देशद्रोही बनाने में क्या हमारे भी कुछ हाथअपराधीहै या नहीं।

परमाल तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि महाराज दाहर ने बौद्धों से घृणा की है, उन पर अत्याचार किये हैं और इसी का परिणाम है कि आज वे शत्रु के सहायक बनने में अपना त्राण मानते हैं।

बलदेव मैं महाराज को दोष देने की धृष्टता नहीं कर सकता। किन्तु हमारे समाज का ढाँचा ही विकृत हो गया है। इस विकृत को दूर करना भी शासन का उत्तरदायित्व है। राज-शक्ति तो प्रजा की माँ के समान है। उसका अपनी प्रत्येक संतान पर समान स्नेह होता है, नहीं होता तो होना चाहिए, तभी प्रजा एक सूत्र में बँधी रह सकती है। अपने महाराज की बात छोड़िए, किन्तु कई शताब्दियों से भारत के समाज का वातावरण विषाक्त होता चला आ रहा है--ऊँच-नीच की भावना समाज में प्रबल रूप धारण कर चुकी है। समाज का संगठन ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक वर्ग को, प्रत्येक धर्म को और प्रत्येक जाति को समान व्यवहार प्राप्त हो। ऐसा अपने देश में नहीं और इसलिए हम में

पारस्परिक स्नेह सहानुभूति का अभाव है। यही इस महान् देश की सबसे बड़ी दुर्बलता है।

क्षपाकर यह तो ठीक है किन्तु एक भाई दूसरे भाई पर अन्याय करता है इस कारण क्या अन्याय के शिकार भाई को अपनी माँ की हत्या कर देनी चाहिए ? बौद्ध आज अपने देश की अपनी माँ की हत्या करने पर उतारू हैं।

बलदेव निश्चय ही इस समय वे पथ-भ्रष्ट हो गये हैं किन्तु हमने उनकी नादानी को दूर करने का क्या कोई उपाय किया ? विभिन्न धर्मों को निकट लाने का जो अनुष्ठान उदार शासकों और विवेकशील विद्वानों ने प्रारम्भ किया था उस पर पानी फिर गया है। हमारी सीमा पर शत्रु ने आकर डेरा डाला उससे बहुत पहले अभीष्ट था कि हम प्रजा के प्रत्येक वर्ग में आत्मीयता स्थापित करते। प्रजा की एकता ही वह दुर्ग है जिससे राष्ट्र अजेय बनता है। शत्रु की सेना कितनी भी प्रबल हो यदि प्रजा देश की रक्षा करने में एकजान हो तो देश का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। शत्रु के सारे मनसूबे चूर हो जाते हैं। जन-मानस विरोधी हो, दृढ़ संकलपी हो तो कोई विदेशी पराये देश पर अपने पाँव नहीं जमा सकता।

जयसिंह तुम ठीक कहते हो, बलदेव ! किन्तु अब तो देश पर युद्ध के बादल घिर चुके हैं और यह भी वास्तविकता है कि हमारा एक वर्ग शत्रु के साथ है, इसलिए अब समाज की दुर्बलताओं पर विचार करने में हमें क्या प्राप्त होगा ? वर्तमान विपत्ति से उद्धार हो सका तो अवश्य ही इस संबंध में संपूर्ण भारत को दृष्टि में रखकर कार्य करना संभव हो सकेगा। इस समय

तो हमें इन्हीं परिस्थितियों में अपना कर्तव्य-पालन करना है। बलदेव, तुम्हारे हृदय की व्यथा हम सबके हृदय की व्यथा है, इसे अंतर में संजोए हुए हमें सर पर कफन बाँधकर युद्ध करना है। सुनाओ, तुम शत्रु-शिविर से क्या समाचार लाये हो ?

बलदेव समाचार शुभ नहीं है। यहाँ से कुछ दूर पर सिन्धुनद में जो टापू है उसका मुखिया वासुदेव मुहम्मद इब्न-कासिम से मिल गया है और जिस प्रकार आम्भी ने सिकन्दर की वितस्ता को पार करने में सहायता की थी उसी प्रकार वह भी शत्रु-सेना को सिन्धुनद पार करने में सहायता दे रहा है।

सूर्यदेवी वासुदेव तो बौद्ध नहीं है।

बलदेव केवल बौद्ध ही देशद्रोही हैं बात ऐसी नहीं है। संभव है कि मुहम्मद इब्नकासिम ने वासुदेव को सिन्ध-प्रदेश का राजा बना देने का प्रलोभन दिया हो। कोई भी धर्म जन्मभूमि से शत्रुता करने की शिक्षा नहीं देता। राम, कृष्ण, बुद्ध या महावीर आदि सभी देशद्रोह को पाप मानते थे। स्वार्थ और लोभ ही मनुष्य से देशद्रोह कराते हैं। स्वार्थ व्यक्ति को नैतिक पतन की पराकाष्ठा पर पहुँचा देता है–स्वार्थी व्यक्ति देश से भी द्रोह करता है, धर्म से भी, समाज और जाति से भी।

जयसिंह चिन्ता नहीं, आज चाहे सारा संसार हमसे विमुख हो किन्तु हम साहस नहीं छोड़ेंगे। खलीफा की विजयोन्माद में चूर सेना भी देखेगी कि भारत के एक छोटे-से प्रदेश की तलवारों में कैसी धार है। जिस प्रकार कठ गणराज्य ने विश्व-विजेता सिकन्दर की सेना का साहस

क्षीण कर दिया था उसी प्रकार हम भी अरब सेना का करने में सफल होंगे। हमें तुरन्त अपनी सेना उस द्वीप की ओर बढ़ानी चाहिए।

क्षपाकर और राजकुमारियों, आप से मेरा निवेदन है कि आप महाराज के पास अलोर दुर्ग में चली जायँ।

सूर्यदेवी नहीं, हम शत्रु से मैदान में लोहा लेंगी।

जयसिंह जानता हूँ, बहन कि तुम वीरांगना हो और शौर्य में पुरुषों से कम नहीं। मृत्यु से तुम भयभीत नहीं हो। तुम वीर-गति पा जाओगी तब भी मुझे खेद नहीं होगा किन्तु यदि ईश्वर न करे युद्ध में जीवित ही तुम शत्रु के हाथ पड़ गयी तो बुरा होगा। ये लोग नारी का सम्मान करना नहीं जानते, यह तुम देख चुकी हो। सिन्धप्रदेश की राजकुमारी का विदेशियों द्वारा अपमान हो यह बहुत अपकीर्ति की बात होगी।

परमाल राजवंश की कुमारियों का अपमान न होने पाये इसकी तो तुम्हें चिन्ता है, भैया! किन्तु जो सहस्रों भारतीय नारियों का अपमान बर्बर विदेशियों ने किया है क्या वह अपकीर्ति की बात नहीं है? मैं बर्बर शत्रुओं से भारतीय नारियों के अपमान का बदला लूँगी। भैया! मेरे हृदय की ज्वाला शत्रु-रक्त से ही शान्त होगी। चिन्ता न करो, हम अपने सम्मान की रक्षा करने के साधन सदा पास रखती हैं। ( परमाल अपनी चोली में से एक छोटी छुरी निकालती है। )

परमाल यह विष बुझी छुरी हमारी संरक्षिका है। शत्रु हमारे शरीर को हाथ लगाये इसके पूर्व ही यह हमारे कलेजे में प्रवेश कर हमें संहार से मुक्त कर देगी। ( सूर्यदेवी अपने अँगूठे के बढ़े हुए नख को दिखाती है। )

सूर्यदेवी  और भैया, हम अपने नख में ऐसा विष रखती हैं जो एक क्षण में प्राण ले ले। हमारे सम्मान के लिए न डरो। नारी होने के कारण हमें राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व पूर्ण करने से वंचित मत करो। देश पर प्राण न्योछावर करने से बड़ा सौभाग्य दूसरा क्या है? हमारा यह सौभाग्य मत छीनो। हम शत्रुओं के रक्त से सिन्धुनद और सिन्धप्रदेश की भूमि को लाल करेंगी— और भैया हम युद्ध में विजय पाएँ या पराजित हों लेकिन हमारा निश्चय है कि हम मुहम्मद इब्नकासिम को यमलोक पहुँचाकर रहेंगी। चाहे इसके लिए हमें बगदाद जाना पड़े।

जयसिंह  बगदाद जाना पड़े। आश्चर्य ! तुमने ठानी क्या है? तुम्हारे हृदय का रहस्य समझ पाना मेरे लिए कठिन है तुम दोनों बड़ी दुराग्रही हो। मैं तुम्हें रोक भी कैसे सकता हूँ ? तो चलो ! हमें शत्रु से लोहा लेने के लिए ससैन्य प्रस्थान करना होगा। मैं शंख बजाता हूँ, जिससे सेना प्रस्थान के लिए तैयार हो जाये। ( जयसिंह शंख बजाता। )

( नेपथ्य में कई शंख बजते हैं और नगाड़ों की आवाजें गूँजती हैं। )

( पटाक्षेप )

# तीसरा अंक

[बगदाद में खलीफा उमर के राजमहल का एक कक्ष। समय—संध्या। सूर्यदेवी मुस्लिम वेशभूषा में अकेली बेचैन स्थिति में इधर-उधर घूम रही है। तभी श्रीवत्स प्रवेश करता है किन्तु सूर्यदेवी उसकी ओर ध्यान नहीं देती।]

श्रीवत्स  सिन्ध की राजकुमारी सूर्यदेवी को श्रीवत्स प्रणाम करता है।

सूर्यदेवी  (घूमना बन्द कर श्रीवत्स की ओर देखती हुई) ओह आप श्रीवत्स! मेरे सिन्ध का सर्वनाश करानेवाले शत्रु! आप यहाँ आ कैसे पाये?

श्रीवत्स  मैं खलीफा से अनुमति लेकर आया हूँ। एक बार देखना चाहता था कि सूर्य ठंडा कैसे हो गया। जानती हो सूर्य शीतल हो जाता है तो पृथ्वी पर प्रलय का अवतरण होता है।

सूर्यदेवी  प्रकृति में भयानक से भयानक और सुहाने से सुहाने परिवर्तन आते रहते हैं। मानव का हृदय भी अपना स्वभाव बदलता है। आप स्वयं को लें, अपने श्रीलंका वासियों को लें, जहाँ विश्व-विजेता रावण ने जन्म लिया। यद्यपि उसका पराक्रम पथ-भ्रष्ट था किन्तु

उसके साहस और पराक्रम पर तो शंका नहीं की जा सकती। उसने सर कटा दिया, सर झुकाया नहीं।

श्रीवत्स किन्तु आप मुझसे यह सब कुछ क्यों कह रही हैं ?

सूर्यदेवी इसलिए कि आज के श्रीलंका को अपने सर की रक्षा की चिन्ता है स्वाभिमान की नहीं। आप लोगों ने उत्कोच दे-देकर खलीफा का लोभ बढ़ाया और उसे दुस्साहसी भी बनाया। आक्रमणकारियों का उपचार तुष्टीकरण नहीं है। तुष्टीकरण से उसकी तृष्णा सुरसा की भाँति वृहदाकार होती जाती है। श्रीलंका ने अरब के लुटेरों से त्राण पाने के लिए उपहार भेजे और उसका दंड भुगता सिन्ध ने, इसलिए मैंने तुम्हें शत्रु कहा।

श्रीवत्स मित्र को शत्रु बनाने में भारत निपुण है इसलिए मैं आपके आरोप का उत्तर नहीं दूँगा। मैं तो यहाँ यह जानने के लिए आया था कि क्या वास्तव में आप दोनो बहनें खलीफा से विवाह करने को सहमत हो गयी हैं। (सूर्यदेवी हँसती है।)

सूर्यदेवी क्या मेरे परिधान ने आपकी जिज्ञासा का उत्तर नहीं दिया। (अपनी हथेलियाँ दिखाते हुए) देखो मेरे हाथों में मेंहदी रचायी गयी है। लाल-लाल रक्तवर्ण। इन हाथों ने कभी शत्रु के रक्त की मेंहदी रचायी थी। आपको कौन-सी मेंहदी सुन्दर लगी, श्रीवत्स !

श्रीवत्स मैं तो विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ कि वास्तव में एक भारतीय नारी स्वधर्म को त्यागकर अपने देश के शत्रु की अर्धांगिनी बनना चाहेगी।

सूर्यदेवी (व्यंग्यपूर्वक) अच्छा जी ! इसका अर्थ हुआ कि आपके मन में भारतीय नारी के प्रति अपार श्रद्धा है

श्रीवत्स हाँ, श्रीलंका तो भारतीय नारी को सीता ही समझता है, जिसे कोई भी प्रलोभन अथवा भीषणतम आतंक भी सत से डिगा नहीं सकता।

सूर्यदेवी तो रावण को भी सीता के सत की चिन्ता होने लगी है ?

श्रीवत्स राजकुमारी, रावण ही श्रीलंका नहीं है, विभीषण भी श्रीलंका है। देश खिचड़ी तो नहीं कि एक चावल की परख से समग्र का अनुमान लगाया जा सके।

सूर्यदेवी लंका में शूर्पनखा भी हो सकती है तो भारत में सुलोचना भी क्यों नहीं। मानव-स्वभाव तो अखिल विश्व में समान है। मान लो कि सूर्यदेवी और परमाल शूर्पनखा ही बन गयीं।

श्रीवत्स मान कैसे लूँ ? संसार की सभी नदियों का जल कुछ दिनों रखा जाने पर विकारग्रस्त हो जाता है किन्तु गंगाजल नहीं। भारतीय नारी गंगाजल की भाँति है। मैंने अलोर में आपका दैत्य-दल-संहारिणी काली का रूप देखा है। और सुना है कि खलीफा की सेना से युद्ध करते हुए आपकी तलवार ने बहुत से शत्रुओं के रक्त का पान किया है।

सूर्यदेवी वह मूर्ख थी, श्रीवत्स !

श्रीवत्स आप नाटक कर रही हैं।

सूर्यदेवी नाटक ?

श्रीवत्स हाँ, नाटक।

सूर्यदेवी आपके अनुमान का कारण ?

श्रीवत्स पराजय, समर्पण, समझौता और पतन आपके रक्त में नहीं हैं। जानती हो आपके बन्दी बन जाने के पश्चात् सिन्ध में क्या-क्या हुआ ?

सूर्यदेवी सर्वनाश की गाथा जानकर ही क्या होगा ?

श्रीवत्स उस सर्वनाश में भी कितना गौरव निहित है उस पर आपको गर्व होना चाहिए। उस गौरव-गाथा से आपको बल मिलेगा, अपने सर्वनाश से बचने का युद्ध में लड़ते-लड़ते मृत्यु को गले लगाने से गौरव प्राप्त होता है। बलिदानी वीरों की गाथाएँ देश को जीवित रखती हैं देश फिर उठता है और दासता की जंजीरों को तोड़ डालता है, किन्तु पराजय की निराशा में शत्रु के आगे आत्मसमर्पण देश को मार डालता है।

सूर्यदेवी तो तुम भी इस बात को मानते हो ? यदि यही मानते होते तो शत्रु को उत्कोच देकर उसकी मित्रता के याचक न बनते।

श्रीवत्स श्रीवत्स श्रीलंका के प्रजाजन में से एक है, वहाँ का राजा नहीं। राजतंत्र में यही तो दोष है कि राजा अपने ऐश्वर्य और विलास की सुविधाओं की रक्षा करने के लिए प्रजा की हत्या कर डालता है।

सूर्यदेवी किन्तु राजा राजा में अन्तर होता है।

श्रीवत्स होता है। अपने पिताजी को ही लो। जब सिन्धु के तट पर राजकुमार जयसिंह पराजित हो गये और आप दोनों बहनें बन्दिनी बना ली गयीं उसके पश्चात् खलीफा की सेना ने अलोर दुर्ग पर आक्रमण किया महाराज दाहर ने वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए प्राण दिये। प्रजा के लिए, आदर्शों के लिए वह मर मिटे। उन्होंने समझौता नहीं किया, समर्पण नहीं किया, पराजय को परास्त कर, मृत्यु का आलिंगन कर उन्होंने अमरत्व प्राप्त किया।

सूर्यदेवी और माताजी ?

श्रीवत्स महाराज दाहर के वीर-गति पाने पर युद्ध समाप्त हो जाना चाहिए था किन्तु उस सर्वनाश की घड़ियों में महारानी ने युद्ध संचालन अपने हाथ में लेकर कई दिनों तक शत्रु से लोहा लिया और जब सिन्ध की बची-खुची सेना भी लगभग समाप्त हो गयी तो उन्होंने जौहर की ज्वाला को जीवन समर्पित कर दिया।

सूर्यदेवी धन्य हो माताजी, आपने भारतीय नारी के यश को अमर कर दिया। मुझे गर्व है कि मैं ऐसी वीरांगना की पुत्री हूँ।

श्रीवत्स इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि आप नाटक कर रही हैं। वीर-प्रसू वीरांगना का रक्त आपकी धमनियों में प्रवाहित हो रहा है। क्या आप उस पवित्र और तेजस्वी रक्त को कलंकित और लज्जित करेंगी? आपका स्थान उस जौहर की ज्वाला में था जिसमें आपकी माताजी समा गयीं न कि खलीफा के हरम में।

( इसी समय परमाल मुस्लिम वेशभूषा में ही हाथ में नंगी तलवार लिए घुमाती हुई नाचती-सी प्रवेश करती है।)

श्रीवत्स राजकुमारी परमाल, यह क्या नृत्य करने का अवसर है?

परमाल ( नाचना बन्द करते हुए) और नहीं तो क्या सिन्ध के पतन और माता-पिता के निधन पर विलाप करने का समय है। श्रीवत्स, हमारी आँखों ने बरसात को नहीं जाना है। इनसे पानी नहीं अंगारों की वर्षा होती है।

श्रीवत्स और उन अंगारों से आप अपने ही घर को जलाना चाहती हैं।

परमाल हाँ, हमारा घर भूतों का डेरा बन गया है। भूतों को

मनुष्य बनाने के लिए हमें पिशाचिनी बनना होगा। हम रक्त पियेंगी अपने ही भाइयों का। खलीफा की बेगम बनेंगी और हमारा सिन्ध गया तो हम शेष भारत का भी सर्वनाश करेंगी।

श्रीवत्स प्रतिशोध की भावना में बह कर देश-द्रोह करोगी ?

परमाल जब सिन्ध पर आक्रमण हुआ और शेष भारत सोता रहा तो क्या उसने देश-द्रोह नहीं किया ?

सूर्यदेवी भारतवासी स्वयं ही देश-द्रोहियों को जन्म देते हैं। सिन्ध में बौद्धों ने और जिन्हें हम नीच जाति का कहकर दुतकारते हैं उन्होंने क्यों शत्रु का साथ दिया ? इस बात को कभी भारतवासी सोचेंगे। हमने जाटों, मेड़ों, गूजरों और लोहानों का कितना अपमान किया ? उन्हें नंगे सिर और नंगे पाँव चलने को बाध्य किया। उनको सम्मानित धंधों से वंचित किया, केवल लकड़ी ढोना उनका धंधा रह गया। जिस देश में उन्हें प्रेम और समानता का व्यवहार प्राप्त न हो उसके प्रति उनसे निष्ठा की अपेक्षा क्यों करते हैं ? वह अपने देश का भला क्यों चाहें ? वह उस धर्म के अनुयायी क्यों बने रहें जो उन्हें अपने सामान्य अधिकारों से भी वंचित रखे।

श्रीवत्स आप दोनों बहनें जितनी पराक्रमशालिनी वीरांगना हैं उतनी ही कुशल अभिनेत्री भी।

परमाल और तुम भी अभिनय करने में कुशल हो।

श्रीवत्स मैं अभिनय कर रहा हूँ ?

सूर्यदेवी और नहीं तो क्या ? यह स्नेह, सहानुभूति, भारत के प्रति आदर और भक्ति, भारत की वीरांगनाओं का स्तुति-गान यह सब क्या है ? श्रीलंका भारत की

अपेक्षा भी अधिक दोषी है। भारत सो रहा है वह विपत्ति से अनभिज्ञ है किन्तु श्रीलंका तो जाग रहा है, विपत्ति को जानता है किन्तु विपत्ति से बचने का उपाय सैन्यबल को नहीं उत्कोच को मानता है, संग्राम को नहीं, तुष्टीकरण को मानता है।

श्रीवत्स मुझे क्षमा करें, राजकुमारी! मुझे कहना पड़ता है कि इसके लिए भारत ही दोषी है। श्रीलंका भी तो भारत का ही अंग है। राजनैतिक रूप में नहीं तो कम-से-कम सांस्कृतिक रूप में तो युग-युग से भारत के साथ जुड़ा हुआ है। भारत विशाल देश है— जन-बल में बुद्धि-बल में और धन-बल में, श्रीलंका का भाग्य भी भारत पर निर्भर है। वह अपने दायित्व को भूल गया तो क्या हम अपना वही हाल करायें जो सिन्ध का हुआ? हमें अपने अस्तित्व की रक्षा तो करनी होगी।

परमाल तो क्या आप समझते हैं कि सिन्ध मर गया? मरते वे हैं जो मरने से डरते हैं। हम अपने रक्त की रेखा को सिन्ध की नहीं भारत की भाग्य-रेखा बनाकर जायँगो। हमारा रक्त भारत के लिए संजीविनी आसव बनेगा। भारत महान् है एक दिन वह जागेगा महाबली हनुमान की भाँति अपनी शक्ति को पहचानेगा और निराशा और निष्क्रियता के समुद्र को एक छलाँग में पार कर जायगा।

श्रीवत्स किन्तु सूर्यदेवी और परमाल भारत के नारीत्व के उज्ज्वल आँचल पर ऐसे कलंक का दाग लगाएँगी जो हिन्द महासगर के संपूर्ण जल से भी न धुल सकेगा। आकाश युग-युग तक अश्रु बहायेगा किन्तु भारत के

इतिहास से इन लज्जाजनक अक्षरों को नहीं मिटा पायेगा। मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि तुम ऐसा करोगी और सच पूछो तो स्वयं खलीफा विश्वास नहीं करते, वह आशंकित हैं कि आप कोई भयानक खेल, खेल रही हैं। आपने रहस्य की घटाओं में अपने वास्तविक स्वरूप को छिपा लिया है।

सूर्यदेवी और खलीफा ने आपको हमारे पास भेजा है इस आवरण के अन्तर्तम में झाँक कर हमारे सत्य स्वरूप को जानने के लिए। है न यही बात! आप गुप्तचर हैं खलीफा के।

श्रीवत्स आपसे संपर्क स्थापित करने के लिए मुझे खलीफा का गुप्तचर बनना पड़ा किन्तु वास्तविकता तो यह है कि मैं इस बात पर संदेह करते हुए भी कि आप अपना धर्म त्याग कर खलीफा की बेगम बनना स्वीकार कर चुकी हैं आपके वास्तविक स्वरूप को जानना चाहता था। मैं आप पर श्रद्धा रखता हूँ, नहीं चाहता कि अपने हृदय सिंहासन से जिस सम्मानित स्थान पर आपको आसीन किया है उससे आप नीचे उतरें।

सूर्यदेवी सुनो, श्रीवत्स, हमने किसी के हृदय-सिंहासन पर सम्मानित स्थान पाने का स्वपन कभी संजोया नहीं। शान्ति, सुख और स्नेह हमारे चरणों पर न्योछावर होने को प्रस्तुत रहे हैं किन्तु हमने उन्हें ठोकर मार कर दूर कर दिया है। खलीफा के हरम के प्रति हमारा कोई आकर्षण नहीं है। अपने धर्म और देश के मोल पर हमें स्वर्ग की साम्राज्ञी बनना भी स्वीकार नहीं है। फिर भी अंभी खलीफा को यही जानना चाहिए कि हम उससे विवाह करने को प्रस्तुत हैं।

श्रीवत्स मुझे खुशी है कि मेरा विश्वास सत्य सिद्ध हुआ किन्तु मैं बहुत संकोच के साथ एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

सूर्यदेवी पूछो।

श्रीवत्स क्या यह सत्य है कि कासिम ने आप दोनों पर बल-प्रयोग किया? इन राक्षसों से किसी भी कुत्सित चेष्टा की आशा की जा सकती है। (सूर्यदेवी और परमाल दोनों अट्टहास करती हैं।)

परमाल सूर्य से आँखें मिलाने की चेष्टा में मनुष्य अन्धा हो सकता है। ऐसा होता तो न कासिम जीवित रहता और न हम जीवित रहतीं। रावण ने इतनी अवधि तक सीता को बंदिनी बना कर रखा किन्तु क्या वह उनके शरीर का स्पर्श कर सका? (इसी समय खलीफा प्रवेश करता है। उसके हाथ में कासिम का कटा हुआ मस्तक है।)

खलीफा लो, राजकुमारी जिस दुर्बुद्धि अभागे ने मेरे लिए लाये जानेवाले फूलों को अपवित्र किया था उसे मैंने मौत के घाट उतार दिया है। (खलीफा कासिम का मस्तक जमीन पर डाल देता है।)

खलीफा अब तुम इसे ठोकर मार कर बदला ले सकती हो। (सूर्यदेवी और परमाल अट्टहास करती हैं।)

परमाल अभागा, निरपराध कासिम।

खलीफा निरपराध।

सूर्यदेवी हाँ, खलीफा महोदय, निरपराध। हम जीवित हैं यही कासिम की नेकनीयती का प्रमाण है। क्या आप समझते हैं कि भारतीय नारी अपमानित होकर भी जीवित रह

सकती है ? भारत के नंदन-कानन के कुसुमों को देखते ही अपने आपको पैगम्बर शरीफ के प्रतिनिधि माननेवाले धर्मगुरु और सम्राट्, संसार को नेक और ईमानदार बनाने की आकांक्षा रखनेवाले खलीफा अपने होश गँवा बैठे उन्हें जिस व्यक्ति ने स्पर्श तक नहीं किया वह निरपराध नहीं तो क्या है ?

खलीफा तो तुमने हमारे साथ छल किया और मेरे नेक, ईमानदार और वीर सेनापति की मेरे ही हाथों से हत्या करायी। लेकिन जब वह निरपराध था तो तुमने उसे मौत के घाट क्यों उतरवाया ?

परमाल हमारे साथ उसने जो व्यवहार किया वह अवश्य ही स्तुत्य कहा जा सकता है किन्तु अन्य अनेक जघन्य अपराधों का वह दोषी है। अरबों ने सिन्धु के नगर और ग्रामों में जो नृशंस अत्याचार युद्ध के समय किए उसका मूल्य कासिम को चुकाना ही था। हम अपने माता-पिता के बलिदान का प्रतिशोध लेने की बात भूल सकती हैं किन्तु अरबों ने जो युद्ध में भाग न लेनेवाले निरीह प्रजाजन पर अत्याचार किये—उसे तो क्षमा नहीं कर सकती थीं और इसीलिए कासिम को मरना पड़ा।

सूर्यदेवी और खलीफा, कुशल मनाओ अपनी कि हमने अपने नाटक का पटाक्षेप यहीं कर दिया नहीं तो कासिम की ही भाँति आप भी अभी तक इस संसार से विदा ले चुके होते।

खलीफा दाहर की मुँहजोर छोकरियों, मेरे भृकुटि-विलास से संसार के राष्ट्र काँप उठते हैं। इसका प्रमाण तुम्हें

सिन्धु में मिल चुका है। तुम मुझे मार डालने का सपना अपने प्राणों में पालती हो ? मूर्ख हो।

परमाल मूर्ख नहीं हैं। हम अपना स्वप्न सत्य कर सकती थीं— आपसे निकाह करके और सेज को बधशाला बनाकर किन्तु प्रतिशोध लेने के लिए हम अपनी पवित्रता को दाव पर लगाना भारतीय आदर्श के विरुद्ध समझती हैं इसलिए आप की रक्षा हो गयी।

खलीफा लेकिन तुम्हारी रक्षा नहीं हो सकती। मेरे हाथों तुमने मेरे विश्वस्त और वीर सेनापति की हत्या करायी है, इसका दंड तो तुम्हें दिया जायगा।

सूर्यदेवी दीजिए, भारतीय नारी मृत्यु को माँ की गोद समझती है।

खलीफा तुम्हें मृत्यु से भी भयंकर दंड दिया जायगा।

परमाल अर्थात्।

खलीफा मैं तुमसे निकाह करूँगा।

परमाल हाँ, हमारा निकाह होगा। प्रवंध कीजिए खुशियाँ मनाने का। नृत्य-गान की महफिलें सजाइए। आतिशबाजी से बगदाद को रोशन कीजिए। आज हमारा निकाह होगा।

सूर्यदेवी किन्तु आपसे नहीं, मृत्यु से। हम प्रत्येक बात के लिए तैयार हो कर आयी हैं। आप सोचते होंगे कि आपके वीर सेनापति ने अपने पराक्रम से हमें बंदिनी बना लिया था। हम स्वयं ही स्वेच्छा से पीजरे में आ बैठी थीं। जो स्वेच्छा से देह के पींजरें से मुक्त होना जानता है उसे संसार की कौन-सी शक्ति बाँध सकती है। उसे कौन मार सकता है ? वह मर कर भी अमर रहता है। अब देखिए, भारत की नारियाँ किस प्रकार अपने

हाथों मृत्यु को गले लगाती हैं। जो मरना जानता है उसे कोई पराधीन नहीं रख सकता। थोड़ी-सी विजय पर इतराओ नहीं खलीफा भारत अजेय है।

[परमाल अपनी तलवार से अपनी गर्दन पर वार करती है और सूर्यदेवी अपने वस्त्रों में से छुरी निकाल कर कलेजे में घुसाती है। नेपथ्य में मृत्यु-संगीत बजता है।]

(पटाक्षेप)

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट--
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

## इस नाटक में...

● भारत स्वतन्त्र रहना चाहता है और अन्य देशों को भी स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते देखना चाहता है। उसने कभी अपनी ओर से किसी से संग्राम नहीं छेड़ा किन्तु यदि किसी ने उसे युद्ध-भूमि में ललकारा है तो उसने ईंट का उत्तर पत्थर से दिया है।

● भारत की चिर-पुरातन संस्कृति ने इसे वीर और पराक्रमी के साथ तपस्वी, त्यागी और सहानुभूतिशील बनाया है। इसका काम सारे संसार को सुख, शान्ति और प्रेम का सन्देश देना है।

● संसार को जानना चाहिए कि भारत एक गौरवशाली और स्वाभिमानी महान् देश है। कोई भी व्यक्ति इसकी सीमा में घुसकर मनमानी नहीं कर सकता। भारत जितना शान्तिप्रिय है उतना ही स्वाभिमान की चुनौती देनेवाले के लिए भयंकर भी।

● देश की मिट्टी का महत्व भगवान् से अधिक है और देश की स्वाधीनता के लिए संग्राम करते हुए वीरगति पाना मुक्तिलाभ से भी अधिक गौरवपूर्ण है।

● स्वार्थ और लोभ ही मनुष्य से देश-द्रोह कराते हैं। स्वार्थ व्यक्ति को नैतिक-पतन की पराकाष्ठा पर पहुँचा देता है... स्वार्थी व्यक्ति देश से भी द्रोह करता है, धर्म से भी, समाज और जाति से भी।